ओ३म्

पाक्षिक परोपकारी

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

वर्ष - ५८ अंक -९ महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र मई (प्रथम) २०१६

महर्षि दयानन्द सरस्वती

आर्य समाज शिकागो

परोपकारिणी सभा के प्रधान डॉ. धर्मवीर जी की अमेरिका प्रचार-यात्रा

डॉ. धर्मवीर जी (१) के साथ
आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के प्रधान श्री विश्रुत आर्य (२) एवं
वैदिक टैम्पल अटलांटा के पुरोहित पंडित वेदश्रमी जी (३)

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

वर्ष : ५८ **अंक** : ९
दयानन्दाब्द: १९२
विक्रम संवत्: वैशाख कृष्ण, २०७३
कलि संवत्: ५११७
सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११७

सम्पादक
प्रो. धर्मवीर

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा,
केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-

भारत में

वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु., **त्रिवार्षिक**-५८० रु., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस. डालर, **द्विवार्षिक**-९५ पा./१५२ डा., **त्रिवार्षिक**-१४० पा./२२५ डा., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-५०० पा./८०० डा.।

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षा:,
सत्यव्रता रहितमानमलापहारा:।
संसारदु:खदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकारा:।।

RNI. No. ३९५९ / ५९

परोपकारी

मई प्रथम २०१६

अनुक्रम

१. मूर्तिपूजा और ऋषि दयानन्द	सम्पादकीय	०४
२. कुछ तड़प-कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	०७
३. बिना मुख ईश्वर ने वेद ज्ञान कैसे...	इन्द्रजित् देव	१५
४. हम शाकाहारी क्यों बनें?	डॉ. गोपालचन्द्र दाश	१८
५. वैदिक पुस्तकालय के नये संस्करण		२१
६. होली - क्या, क्यों, कैसे?	डॉ. रूपचन्द्र	२२
७. पुस्तक परिचय	आचार्य सोमदेव	२४
८. जिज्ञासा समाधान-११०	आचार्य सोमदेव	२९
९. संस्था-समाचार		३१
१०. ईश्वर की सिद्धि में प्रत्यक्षादि प्रमाण...	ब्र. राजेन्द्रार्य	३५
११. विश्व में प्रथम बार वेद ऑन लाईन	आचार्य सोमदेव	३८
१२. स्तुता मया वरदा वेदमाता-३३		३९
१३. आर्यजगत् के समाचार		४०

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

सम्पादकीय

मूर्तिपूजा और ऋषि दयानन्द

– धर्मवीर

मूर्ति शब्द प्रतिमा या साकार वस्तु के अर्थ में प्रचलित है। संस्कृत में मूर्त शब्द व्यक्त होने के अर्थ में प्रयुक्त होता है। इसका दूसरा अर्थ निराकार से साकार होना है। संसार में दो प्रकार की सत्ताएँ दृष्टिगोचर होती हैं– एक चेतन और दूसरी अचेतन। ऋषि दयानन्द की मान्यता के अनुसार दो चेतन सत्तायें स्वरूप से अनादि और पृथक्–पृथक् हैं। एक अचेतन सत्ता प्रवाह से अनादि और एक है। दूसरी चेतन सत्ता के रूप में जीव और ईश्वर दोनों निराकार हैं और एक अचेतन सत्ता प्रवाह से अनादि होने के कारण कभी व्यक्त और कभी अव्यक्त होती है।[१] इसी को संसार के रचना काल में व्यक्त और प्रलय काल में अव्यक्त दशा में बताया है। इस प्रकार संसार ही कभी मूर्त व्यक्त और कभी अमूर्त अव्यक्त दशा में होता है।[२] इसी अर्थ में उपनिषद् ग्रन्थों में **मूर्तञ्च–अमूर्तञ्च** इसका प्रयोग दिखाई देता है।[३] संस्कृत साहित्य में मूर्त शब्द का अनेकार्थ प्रयोग पाया जाता है। अमरकोष तृतीय काण्ड नानार्थ वर्ग–३ श्लोक ६६ में मूर्ति शब्द का अर्थ बताते हुए कहा गया है– **मूर्तिः काठिन्यकाययोः।** –अर्थात् मूर्ति शब्द का प्रयोग कठोरता और काया–शरीर के अर्थ में पाया जाता है। मूर्ति शब्द का अर्थ है– आकार वाली वस्तु। इस प्रकार सोना, चाँदी, पीतल, लोहा, मिट्टी आदि से बनी साकार वस्तु मूर्ति कहलाती है।

एक साकार वस्तु से दूसरी साकार वस्तु की तुलना प्रतिमा कही जाती है। संस्कृत में प्रतिमा शब्द का मूल अर्थ बाट है। जिससे वस्तु को तोला जाता है, उस साधन को प्रतिमा कहा जाता है।[४] एक वस्तु की दूसरी वस्तु से तुलना अनेक प्रकार से होती है– रूप से, भार से, योग्यता से। बहुत प्रकार से किन्हीं दो वस्तुओं के बीच समानता देखी जा सकती है। यह तुलना जड़ पदार्थों में ही सम्भव है। साकार से साकार की प्रतिमा हो सकती है। निराकार से साकार प्रतिमा की रचना सम्भव नहीं है, इसलिए साकार व्यक्ति, वस्तु आदि की प्रतिमा बन सकती है। एक समान आकृति को देखकर दूसरी समान आकृति का बोध होता है, जैसे चित्र को देखकर व्यक्ति का या व्यक्ति को देख कर चित्र और व्यक्ति की समानता का ज्ञान होता है। ईश्वर के समान कोई नहीं, इसलिए वेद कहता है–

न तस्य प्रतिमा अस्ति। –यजु. ३२/३।।

आगे चलकर समानता के कारण मूर्ति के लिए भी प्रतिमा शब्द का प्रयोग होने लगा। आज प्रतिमा शब्द से मूर्ति का ही अर्थ ग्रहण किया जाता है।

संसार मूर्त है, इसलिए इसमें मूर्तियों का अभाव नहीं है। साकार पदार्थों से बहुत सारे दूसरे साकार पदार्थ बनाये जाते हैं, स्वतः भी बन सकते हैं, अतः मूर्ति कोई विवाद या विवेचना का विषय नहीं है। मूर्ति के साथ जब पूजा शब्द का उपयोग किया जाता है, तब अर्थ में सन्देह उत्पन्न होता है। पूजा शब्द सत्कार, सेवा, आदर, आज्ञा पालन, रक्षा आदि के अर्थ में प्रयुक्त होता है। पूजा शब्द का उपयोग जब–जब पदार्थों के प्रसंग में किया जाता है, तो सन्देह की स्थिति उत्पन्न होती है। यज्ञ शब्द का प्रयोग अग्निहोत्र के लिए किया जाता है, जिसका अर्थ देवपूजा भी है।[५] वेद में जड़ पदार्थों को भी देवता कहा है।[६] इसी क्रम में चेतन को भी देव कहा गया तथा परमेश्वर को महादेव कहा गया। इस प्रकार देव शब्द से साकार और निराकार तथा जड़ और चेतन दोनों प्रकार के पदार्थों का ग्रहण होने लगा। इनमें एक के मूर्त होने से दूसरे के मूर्त होने की सम्भावना बन जाती है। मूर्त पदार्थों में जड़ और चेतन दोनों पदार्थ देवता की श्रेणी में आते हैं– पहले अग्नि, वायु, जल आदि, दूसरे माता–पिता, आचार्य, अतिथि आदि।[७] इस प्रकार देव शब्द की समानता से पूजा की समानता जुड़ती दिखाई देती है। इस तरह साकार, निराकार, जड़, चेतन में देवत्व बन गया तो सब की पूजा में भी समानता मानी व की जाने लगी।

सामर्थ्य और उपयोगिता के कारण चेतन से जिस

प्रकार प्रार्थना की जाती है, उसी प्रकार जड़ से उसके सामर्थ्य के सामने विवश होकर अग्नि, वायु, जल आदि से भी प्रार्थना की जाने लगी। चेतन को भोजन, आसन, माला, सेवा, सत्कार आदि से सन्तुष्ट किया जाता है, उसी प्रकार जड़ देवता को भी सन्तुष्ट करने की परम्परा चल पड़ी। सभी देव शब्दों का मानवीकरण कर दिया, चाहे वह जड़ हो या चेतन, साकार हो या निराकार। मनुष्यों ने इन सब की मूर्ति बना ली। उन वस्तुओं के गुण उन मूर्तियों में चिह्नित कर दिये गये। ऐसा करते हुए ईश्वर का भी मानवीकरण हो गया। मानवीकरण होने में रूप और नाम के बिना उसका उपयोग नहीं हो सकता, इसलिए महापुरुषों का रूप और नाम ईश्वर की श्रेणी में आ गया। पहले दौर में शिव, विष्णु, राम, कृष्ण आदि रूप देवत्व की श्रेणी में आते दिखाई देते हैं। ईश्वर के स्थान पर समाज में इन देवी-देवताओं की प्रतिमाएँ पूजी जाने लगीं और इनसे ही प्रार्थना भी होने लगी। इस प्रकार इन मूर्तियों से मनुष्य के दो अभिप्राय सिद्ध हो जाते हैं- प्रथम जो उपस्थित नहीं है, वह उपस्थित हो जाता है। जिसकी मृत्यु हो चुकी है जो इस संसार से जा चुका है, उसकी स्मृति को स्थायित्व मिल जाता है तथा दूसरा अप्रत्यक्ष परमेश्वर इस मूर्ति के माध्यम से प्रत्यक्ष हो जाता है। इस प्रकार निराकार ईश्वर को साकार बनाने का विचार मूर्ति-पूजा का आधार है।

जब ईश्वर को अपनी इच्छानुरूप रूप दिया जा सकता है तो बाद के लोगों ने राम-कृष्ण के स्थान पर उनके इष्ट प्रिय व्यक्तियों को ही ईश्वर के स्थान पर मन्दिर में रख दिया। इस क्रम में मत-मतान्तरों के संस्थापक मन्दिरों के पूज्य देव बन गये। कुछ महावीर, नानक आदि ईश्वर की श्रेणी में आ गये। इसके बाद के युग में मन्दिर के महन्त, महामण्डलेश्वर, गुरु आदि लोगों की भी मूर्तियाँ बनने लगीं, उनकी भी ईश्वर के स्थान पर पूजा होने लगी। कुछ लोगों ने अपने माता-पिता, प्रियजनों को ही मन्दिर के देवताओं के स्थान पर अधिष्ठित कर दिया। उनकी पूजा को ही ईश्वर की पूजा समझने लगे। आज तो शंकराचार्य के स्थान पर आसाराम, रामरहीम, रामपाल दास जैसे कुछ पीर-फकीर भी मूर्ति के रूप में या समाधि के रूप में पूजे जाने लगे और कुछ लोग स्वयं ही अपने को पुजवाने लगे। इस तरह निराकार चेतन, सर्वव्यापक ईश्वर की यात्रा, साकार जड़ में बदल गई।

मूर्तिपूजा का समाज पर दो प्रकार से प्रभाव पड़ा। मूर्तिपूजा करने से मनुष्य कायर और भीरु बनता गया। देवता के रुष्ट होने का भय दिखाकर पुजारियों ने राजा से जनसामान्य तक को ठगा है, आज भी ठग रहे हैं। दूसरा प्रभाव समाज में मूर्तिपूजा का यह हुआ कि पुरुषार्थहीनता बढ़ी। मनुष्य के मन में इस प्रकार के विचार दृढ़ होते गये कि मनुष्य को बिना पुरुषार्थ के ही इच्छित फल की प्राप्ति हो सकती है। देवता पूजा से प्रसन्न होकर मनोवाञ्छित फल प्रदान करते हैं। इस विचार पर आर्य विचारक एवं दार्शनिक पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय ने इस प्रकार लिखा है- ''वह (मूर्तिपूजक) अन्धकार में है और उसी में रहना चाहता है। वह प्रकाश का इच्छुक नहीं है। यदि आप बातचीत करके इस सम्बन्ध में उसे बतलाना चाहें तो वह बात उसे रुचिकर न होगी और वह उससे घबरायेगा। उसे भय है कि इस प्रकार की बौद्धिक छानबीन उसे अविश्वासी न बना दे और इसीलिए वह उससे बच निकलने का प्रयत्न करता है। इसका कारण यह नहीं कि वह तर्क-वितर्क की योग्यता नहीं रखता। मूर्तिपूजकों में आपको सर्वोत्तम वकील, जो चकित करने वाली तीव्र तार्किक बुद्धि रखते हैं, तर्क शास्त्र के उपाध्याय, जो सूक्ष्म हेत्वाभास को ढूँढ़ निकालने की क्षमता रखते हैं तथा चतुर राजनीतिज्ञ, जो संसार के राजनैतिक क्षेत्र में गुह्य-से-गुह्य कार्य करने वाली शक्तियों का सहज साक्षात् कर लेते हैं, मिलेंगे। उनमें आपको वाणिज्य कुशल व्यापारी, जिनकी दृष्टि से संसार की किसी मण्डी का कोई कोना छिपा हुआ नहीं है, अर्थशास्त्री जो शोषक-वर्ग की चालों का सफलतापूर्वक प्रतिकार कर सकते हैं, ज्योतिष-विद्याविशारद, जिनको आकाशस्थ ग्रह-उपग्रहों का अपने ग्रह से भी कहीं अधिक परिज्ञान है तथा गणितज्ञ, जिन्हें गणित के सूक्ष्म तत्त्वों पर पूर्ण अधिकार है, भी मिल जायेंगे। ये सब बुद्धि विशेषज्ञ है, परन्तु आप इन्हें मन्दिरों में अनपढ़ लोगों के साथ वैसी ही भक्ति-भावना तथा अनिश्चित बुद्धि से मूर्तिपूजा करते देखेंगे।''

(लेखक पं. राजेन्द्र, भारत में मूर्तिपूजा, पृ. १९९)

ऋषि दयानन्द के जीवन में मूर्तिपूजा के प्रति अनास्था का भाव उनके बाल्यकाल से देखने में आता है। जिस समय बालक मूलशंकर की आयु मात्र तेरह वर्ष की थी, उस समय जिस घटना ने उनके जीवन में झंझावात उत्पन्न किया, वह घटना मूर्तिपूजा से ही सम्बन्ध रखती है। महर्षि दयानन्द ने इस घटना का वर्णन अपनी आत्मकथा में इस प्रकार किया है- ''जब मैं मन्दिर में इस प्रकार अकेला जाग रहा था तो घटना उपस्थित हुई। कई चूहे बाहर निकलकर महादेव के पिण्ड के ऊपर दौड़ने लगे और बीच-बीच में महादेव पर जो चावल चढ़ाये गये थे, उन्हें भक्षण करने लगे। मैं जाग्रत रहकर चूहों के इस कार्य को देखने लगा। देखते-देखते मेरे मन में आया कि ये क्या है? जिस महादेव की शान्त पवित्र मूर्ति की कथा, जिस महादेव के प्रचण्ड पाशुपतास्त्र की कथा, जिस महादेव के विशाल वृषारोहण की कथा गत दिवस व्रत के वृत्तान्त में सुनी थी, क्या वह महादेव वास्तव में यही है? इस प्रकार मैं चिन्ता से विचलित चित्त हो उठा। मैंने सोचा भी यदि यथार्थ में ये वही प्रबल, प्रतापी, दुर्दान्तदैत्यदलनकारी महादेव हैं तो अपने शरीर पर से इन थोड़े-से चूहों को क्यों विताड़ित नहीं कर सकते? इस प्रकार बहुत देर तक चिन्ता स्रोत में पड़कर मेरा मस्तिष्क घूमने लगा। मैं आप ही अपने से पूछने लगा कि जो चलते-फिरते हैं, खाते-पीते हैं, हाथ में त्रिशूल धारण करते हैं, डमरु बजाते हैं और मनुष्यों को श्राप दे सकते हैं, क्या यह वही वृषारूढ़ देवता हैं जो मेरे सामने उपस्थित हैं?'' इस घटना के बाद बालक मूलशंकर ने पिता को जगाकर अपनी शंकाओं का समाधान कराना चाहा, सन्तोषजनक उत्तर न मिलने पर घर आकर व्रत तोड़ दिया और भोजन करके सो गया। हम देखते हैं कि यह बालक जीवन भर मूर्तिपूजा के पाखण्ड को खण्डित करता रहा। इसकी निरर्थकता बताने में जिस योग्यता और साहस को हम देखते हैं, वह उल्लेखनीय है। महर्षि दयानन्द के सामने उदयपुर के भगवान् एकलिंग की गद्दी का प्रस्ताव था, शर्त केवल एक थी- मूर्तिपूजा खण्डन छोड़ना, परन्तु महर्षि दयानन्द का उत्तर था- ''मैं तुम्हारी इच्छा पूर्ति करूँ अथवा ईश्वरीय आज्ञा का पालन करूँ?'' (भारत में मूर्ति पूजा, पृ. १६२)

महर्षि दयानन्द ने मूर्ति पूजा के खण्डन में कभी कोई समझौता नहीं किया। इस पर पादरी के. जे. लूकस ने जो विचार दिये हैं, वे ध्यातव्य हैं। उक्त पादरी ने १८७७ में फर्रुखाबाद में मूर्ति पूजा के विषय में उनके व्याख्यान सुने थे, पादरी लूकस ने बतलाया- ''वे मूर्तिपूजा के विरुद्ध इतने बल, इतने स्पष्ट और विश्वास के साथ बोलते थे कि मुझे फर्रुखाबाद की जनता की ओर से उनका हार्दिक स्वागत किये जाने पर आश्चर्य हुआ। मुझे उनका यह कथन स्मरण है कि जब मैंने उनसे कहा कि यदि आपको तोप के मुँह पर रखकर कहा जाए कि यदि तुम मूर्ति को मस्तक न झुकाओगे तो तुम को तोप से उड़ा दिया जायेगा, तो आप क्या कहेंगे? स्वामी जी ने उत्तर दिया कि 'मैं कहूँगा कि उड़ा दो' दयानन्द इतने निर्भीक थे।''

(भारत में मूर्तिपूजा पृ. १६८)

महर्षि दयानन्द का मूर्तिपूजा खण्डन एक आग्रह मात्र नहीं था। उन्होंने मूर्तिपूजा की निरर्थकता सिद्ध करने में दार्शनिक, आर्थिक, सामाजिक-सभी पक्षों पर गहरा विचार किया है। जो लोग ईश्वर उपासना में मूर्तिपूजा को सहायक समझते हैं, उनके तर्कों का प्रबल तर्कों से खण्डन किया है।

''प्रश्न- साकार में मन स्थिर होना और निराकार में स्थिर होना कठिन है, इसलिए मूर्तिपूजा करनी चाहिए।

उत्तर- साकार में मन स्थिर कभी नहीं हो सकता, क्योंकि उसको मन झट ग्रहण करके उसी के एक-एक अवयव में घूमता और दूसरे में दौड़ जाता है और निराकार परमात्मा के ग्रहण में मन अत्यन्त दौड़ता है तो भी अन्त नहीं पाता। निरवयव होने से चञ्चल भी नहीं रहता, किन्तु उसी के गुण-कर्म-स्वभाव का विचार करता-करता आनन्द में मग्न होकर स्थिर हो जाता है और जो साकार में स्थिर होता तो सब जगत् का मन स्थिर हो जाता, क्योंकि जगत् में मनुष्य स्त्री, पुत्र, धन, मित्र आदि साकार में फँसा रहता है, परन्तु किसी का मन स्थिर नहीं होता, जब तक निराकार में न लगावें, क्योंकि निरवयव होने से उसमें मन स्थिर हो जाता है। इसलिए मूर्तिपूजा करना अधर्म है।''[५]

शेष भाग अगले अंक में.....

- डॉ. धर्मवीर

कुछ तड़प-कुछ झड़प

– राजेन्द्र जिज्ञासु

पं. लेखराम जी का साहित्य प्रकाशनाधीन :- जब तक यह अंक पाठकों के हाथों में पहुँचेगा, तब तक रक्त साक्षी वीर शिरोमणि पूज्य पं. लेखरामजी के मौलिक, खोजपूर्ण और प्रेरणाप्रद साहित्य के प्रकाशन की प्रक्रिया आरम्भ हो चुकी होगी। यह साहित्य दो भागों में छपेगा। इसके प्रकाशन का दायित्व परोपकारिणी सभा ने लिया है। यद्यपि मेरी साहित्यिक व्यस्तताओं का भी कोई अन्त नहीं, तथापि जब श्रीमान् यशवन्त जी, श्री अनिल आर्य तथा श्री लक्ष्मण जी जिज्ञासु ने इस सेवक को इसके सम्पादन का कार्यभार सम्भालने को कहा तो मैं उन्हें न नहीं कर सका। जिस प्राणवीर लेखराम के नाम की मुझे शैशवकाल में ही घुट्टी घोटकर पिलाई गई, मैं उसका तर्पण करने से न कर ही नहीं सकता था। श्री डॉ. धर्मवीर जी ने मुझे इस कार्य को सिरे चढ़ाने की प्रबल प्रेरणा दी।

किसी लोभ व लाभ के लिये नहीं, न ही किसी पर अपना अहसान लादने के लिये यह कार्य कर रहा हूँ। ऋषि ऋण चुकाने के लिये प्रातः से सायं तक यह कार्य करता हूँ। अभी और कई मास दूसरे भाग में लगेंगे। आर्य पुरुषो! आपको पता होना चाहिये कि सत्यार्थप्रकाश के पश्चात् धर्म रक्षा व जाति रक्षा का सबसे बड़ा शस्त्रागार पं. लेखराम जी का साहित्य ही रहा है। न जाने जाति के कितने लाल पं. लेखराम के साहित्य को पढ़कर धर्मच्युत होने से बचे। पं. लेखराम का साहित्य आर्य हिन्दू जाति की रक्षा की बहुत बड़ी सजीव सेना बनकर सामने आया।

मास्टर आत्माराम, आचार्य रामदेव, पं. ठाकुरदत्त शर्मा, महात्मा विष्णुदास (स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी जैसी विभूति के निर्माता), पं. देवप्रकाशजी (मौलाना अब्दुल लतीफ), पं. शान्तिस्वरूप जी (मौलाना मुहम्मद अली कुरेशी), ला. देवीचन्द, प्रि. रामरत्न, स्वामी विज्ञानानन्द जी आदि सब पं. लेखराम की वाणी व लेखनी की देन थे।

जिन्होंने पं. लेखराम साहित्य का अनुवाद किया, वे मान्य विद्वान् मेरे पूजनीय थे। मुझ से कहीं अधिक विद्वान् थे, तथापि उनके फारसी उर्दू के अत्यधिक अभ्यास के कारण उनके अनुवाद में हिन्दी की रंगत फारसीमय रही। मैंने ऐसे शब्द बदलने का प्रयास किया है। प्रूफ रीडर फारसी न जानने के कारण फारसी के प्रमाणों के दोष दूर न कर सके। बड़ी अशुद्धियाँ रह गईं। जो कुछ बन सका, मैंने किया है व कर रहा हूँ। कई महत्त्वपूर्ण पाद टिप्पणियाँ दी हैं। कई वाक्यों को मुखरित किया है।

पण्डित जी के साहित्य की छाप सर सैयद अहमद खाँ व डॉ. इकबाल जैसे मुसलमान विचारकों पर स्पष्ट है। यह छाप गहरी व अमिट है। ईसाई विचारकों ने देश विदेश में इसे पढ़ा। पं. लेखराम के क्रिश्चन मत दर्पण की विदेशों में आज तक धाक है। पुनर्जन्म मीमांसा ग्रन्थ आज भी बेजोड़ है। आज मुसलमान विचारक पण्डित जी के तर्कों को अपनाकर गौरवान्वित हो रहे हैं। यह मैं प्रस्तावना में दूँगा । राजा सर किशनप्रसाद प्रधानमन्त्री हैदराबाद को पं. रामचन्द्र जी देहलवी ने विधर्मी होने से बचाया था। पं. लेखराम की ऊहा व पण्डित जी के तर्कों की अमृतधारा पिलाकर राजा किशनप्रसाद को धर्मच्युत होने से बचाया जा सका। वही साहित्य परोपकारिणी सभा भेंट करने जा रही है।

श्री पं. निरञ्जनदेव जी इतिहास केसरी ने एक बार इस लेखक को कहा कि पं. लेखराम जी के पश्चात् हमारे सब नामी शास्त्रार्थ महारथियों के अति सूक्ष्म तर्क व अचूक युक्तियाँ पं. लेखराम जी की ही देन थे। श्री पं. कृपाराम जी (स्वामी दर्शनानन्द), स्वामी योगेन्द्रपाल अपने-आपको उनका ऋणी मानते थे।

पं. रामचन्द्र जी देहलवी, महाशय चिरञ्जीलाल जी प्रेम, पं. शान्तिप्रकाश जी व ठाकुर अमरसिंह आर्य मुसाफिर के मुख से मैंने अनेक बार ऐसे ही उद्‌गार सुने। प्रेम ने तो अपने एक गीत में यहाँ तक लिखा है कि पं. लेखराम जी को सुनकर वह मुसलमान होते-होते बचे। हिन्दू जाति पं. लेखराम और उनकी शिष्य परम्परा के ऋण से कभी भी उऋण नहीं हो सकती। विदेशी मुस्लिम लेखकों के नवीन इस्लामी साहित्य में मैंने पण्डित लेखराम जी के साहित्य

की स्पष्ट छाप देखी है। पण्डित जी के ग्रन्थ संग्रह के प्रथम भाग में मेरे प्राक्कथन में पाठक ऐसी नई-नई जानकारी पाकर गौरव अनुभव करेंगे। पुनर्जन्म मीमांसा की तो पृथक् भूमिका और भी ठोस और विचारोत्तेजक होगी।

ऋषि -जीवन विचार :- पं. लेखराम जी की चर्चा चली है तो ऋषि-जीवन पर कुछ विचार करने का एक अवसर हाथ लगा है। प्रबुद्ध पाठक नोट कर लें कि पण्डित जी के ग्रन्थों में यत्र-तत्र ऋषि जीवन विषयक पर्याप्त ऐसी ठोस सामग्री है जो अन्यत्र किसी ग्रन्थ या जीवन चरित्र में नहीं है। पण्डित जी बिना प्रमाण के तो कुछ लिखते ही नहीं थे। अनजाने से या कातिब से उनके साहित्य में चूक की तो कहीं सम्भावना हो सकती है। उनकी लिखाई हर कोई नहीं पढ़ सकता था। मुसलमान लेखकों, मूर्धन्य इस्लामी विद्वानों यथा मौलाना रफीक दिलावरी ने पण्डित जी के अथाह व प्रामाणिक कुरान विषयक ज्ञान की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। इस्लाम के एक मूर्धन्य विद्वान् मौलाना अब्दुल्ला ने तभी तो आपको 'कोहे वकार' गौरव गिरि लिखा है और एक बाबूजी ने पण्डित जी के लिये लिखा है कि उन्हें फारसी, उर्दू का मामूली ज्ञान था।

ऋषि जीवन पर अभी चिन्तन-मन्थन करने से बहुत कुछ मिल सकता है और मिलेगा। पं. लेखराम जैसी उर में आग व धुन चाहिये। कोई आँखें खोलकर पढ़े तो पण्डित जी के ग्रन्थों में चाँदापुर शास्त्रार्थ, मौलवी मुरादअली की ऋषि के प्रति श्रद्धाञ्जलि, परोपकारिणी सभा द्वारा मौलाना अब्दुल अजीज की शुद्धि के बारे में नये तथ्य सप्रमाण मिलेंगे। कई वर्ष पूर्व प्रकाशित साप्ताहिक लाहौर के एक विशेषाङ्क में ऋषि-दर्शन करने वाले एक आर्य पुरुष के एक पठनीय लेख में मुझसे पंजाब यात्रा के समय रावलपिण्डी पंजाब में जिस पारसी सेठ की कोठी में ऋषि स्वल्प समय के लिए ठहरे, उसका नाम 'जमशेद' सा मुझसे पढ़ा गया। पं. लेखराम जी, स्वामी सत्यानन्द जी के ग्रन्थों में कुछ और छपता चला आ रहा है।

तब मैंने पत्रों में कई बार लिखा कि यह नाम 'जमशेद' होना चाहिये। पारसियों के साहित्य व फारसी भाषा का विद्यार्थी होने से मेरा यह मत बना कि पारसियों में जमशेद नाम होता है.....। उन दिनों मैंने श्री ओंकारनाथ जी को मुम्बई पत्र लिखकर यह कष्ट दिया कि वह पारसियों से सम्पर्क करके पं. लेखराम जी, स्वामी सत्यानन्द जी लिखित नाम व मेरा मत बताकर पूछें कि यह नाम क्या हो सकता है? सौभाग्य से ओंकारनाथ जी लाहौर से ही रावलपिण्डी के उस पारसी परिवार से परिचित थे। देश विभाजन के समय उस परिवार के लोग मुम्बई आ गये थे।

ओंकारनाथ जी ने उनकी सब कम्पनियों के नाम व दूरभाष नं. मुझे भेज दिये। मैंने उनका पत्र सुरक्षित रख लिया और उसका छायाचित्र ऋषि-जीवन में छपवा दिया। पं. चमूपति जी आदि सब माननीय लेखकों की पुस्तकों में की गई चूक का सुधार हो गया। हर्ष का विषय तो यह है कि विभिन्न लेखकों के ग्रन्थों का अवलोकन करते-करते मैंने दीवान हरबिलासजी के अंग्रेजी ग्रन्थ में यह नाम शुद्ध पढ़ा। मैंने तब उनकी खोज व परिश्रम की अपने लेखों में प्रशंसा की।

''मारो सूरे आर्यों नूँ'' :- एक यशस्वी क्रान्तिकारी लिखित एक उर्दू पुस्तक अनूदित करके इस लेखक ने छपवाई। उसमें एक घटना दी गई है। लाहौर में वीर अजीत सिंह की संस्था भारत माता सोसायटी की सभा पर लाठी डण्डे बरसाने के लिये बाहर से भी पुलिस बुलवाई गई। अंग्रेजों ने बाहर से बुलवाई गई पुलिस के मुसलमान सिपाहियों को सिखा रखा था कि तुम्हारे सम्प्रदाय के शत्रु आर्यों की मार कूटाई करनी है। ''या अली! मारो सूरे आर्यों नूँ'' अर्थात् इन सूअर आर्यों की अली का नाम ले लेकर अच्छी धुनाई कर दो। उस सभा में मुसलमान कृषक भी थे। वे पुलिस वालों के मुख से पिटते हुए उनके इन शब्दों का रहस्य न समझ सके।

इससे शासकों की कूटनीति व दुर्भावना का पता चल गया।

यह घटना किसी भी इतिहासकार ने आज पर्यन्त नहीं लिखी। ला. लालचन्द फलक के एक ग्रन्थ में दो-तीन वर्ष पूर्व यह घटना फिर मिल गई। यह घटना श्री ला. लाजपतराय जी व वीर अजीत सिंह के देश से निष्कासन से थोड़ी पहले की है।

प्रायः आर्यसमाजी व इतिहास प्रेमी यह समझते हैं कि सन् १९०७-१९२९ तक गोराशाही ने आर्यसमाज के

प्रति दमन व दलन की नीति अपनाई। लाला लाजपतराय जी ने यह भी लिखा है कि गोराशाही ने अपने भक्तों (मूलराज आदि) के द्वारा आर्य समाज में फूट पैदा कर दी। आर्यसमाज के सब शत्रु मिलकर जो कार्य न कर सके, लाला जी के अनुसार सरकार भक्तों ने वह कर दिखाया। अभी अंग्रेज सरकार की आर्य समाज के प्रति नीति विषयक एक महत्त्वपूर्ण Document हमारे हाथ लगा है। 'A Revolt in India Feared' भारत में विद्रोह की आशङ्का शीर्षक की इस दस्तावेज से स्पष्ट है कि गोराशाही ने तो मई सन् १९०१ में ही आर्यों को कुचलने के लिये कमर कस ली थी। "The India government is at present time making a close investigation into the Arya Samaj." आर्य समाज को "the greatest reform movement." सबसे बड़ा सुधार आन्दोलन माना गया है। इस सारे दस्तावेज में स्वामी विवेकानन्द जी का कहीं भी उल्लेख नहीं। उनके जीवनकाल में शिकागो यात्रा के पश्चात् उनकी चर्चा इसमें नहीं। आर्य समाज में मांस प्रचार का झण्डा उठाने वाले दल को PERFECT पूर्ण और शाकाहारी वेद भक्तों को IMPERFECT अयोग्य माना गया है। आश्चर्य का विषय तो यह है कि मूलराज व उसके चेलों से अंग्रेजी शिक्षा में शाकाहारी दल के नेता कहीं बढ़-चढ़ कर थे। सरकार इनसे भयभीत-शङ्कित-कम्पित थी। आर्यसमाज से सरकार व ईसाई मिशन बहुत डरा हुआ था। सरकार आर्य समाज के उत्थान से चिन्तित थी। गोरा शाही मानती थी कि "Arya samaj is a political soceity."आर्य समाज राजनीतिक दल है। आर्यसमाज के संस्कृतज्ञ वेदाभिमानी पण्डितों को सरकार व चर्च बहुत भयानक व विद्रोही मानते था। इन राष्ट्रवादी जातिरक्षक आर्यों को सरकार शत्रु मानती थी। शेष फिर और तथ्य दिये जायेंगे।

लगन कोई ऐसी लगा दीजियेगा :- देशविभाजन तक आर्यसमाजी प्रभात फेरियों, नगर कीर्तनों, आर्य स्कूलों में सत्संगों में ऐसे-ऐसे गीत अवश्य गाते थे, जिनमें धर्मप्रचार व धर्मरक्षा के लिए ईश्वर से विशेष प्रार्थनायें की जाती थीं, यथा-

'सन्देश देश-देश में वेदों का दें सुना'

हो पीड़ा किसी को तो तड़पा करूँ मैं।

लगन कोई ऐसी लगा दीजियेगा.....इत्यादि।

इसी का फल था कि सेवा मुक्त होकर पं. क्षेमकरण जी वेद का गम्भीर अध्ययन करके त्रिवेदी बन गये। पं. गंगाप्रसाद जी उपाध्याय ने सत्तर वर्ष की आयु से बहुत आगे जाकर ट्यूशन रखकर अरबी भाषा पर अधिकार प्राप्त करके एक नया चमत्कार कर दिया। मैं गत कई वर्षों से पेंशन प्राप्त वृद्धों को वानप्रस्थ की वेला में पूर्णकालिक धर्मरक्षक, धर्मप्रचारक बनने की प्रेरणा देता चला आ रहा हूँ, परन्तु कोई साहस ही नहीं करता। अपने एक सुयोग्य प्रेमी को कहा, हमारे पास रहकर कुछ कर दिखाओ। उसकी पत्नी का तो निधन हो चुका है, परन्तु वह ऐसा साहस नहीं कर सका।

महाराष्ट्र के श्री रमेश ठाकुर तथा सोमवंशी गुरुजी चरित्रवान् व विद्वान् हैं। उन्हें कहा-स्वामी श्रद्धानन्द जी के मिशन का झण्डा उठाकर निकलो, परन्तु दोनों ने मेरे प्रेमी होने पर भी मेरी नहीं सुनी। प्रतिवर्ष आर्य शिक्षा संस्थाओं से पचासों प्राचार्य, अध्यापक व प्राध्यापक रिटायर होकर सत्संग में भी नहीं दीखते। डायरेक्टर बनने की भूख सबमें हैं। मेरी ज्येष्ठ पुत्री के पति श्री दिलीप वेलाणी ने लगभग साठ वर्ष की आयु में संस्कृत सीखकर मुझे संस्कृत में पत्र लिखा तो हम उनका पत्र पाकर गर्वित हुए। कुछ तो किया।

महाराष्ट्र के वयोवृद्ध आर्य पं. मनसाराम जी बार्शी ने अपने अभिनन्दन के उत्तर में यह मार्मिक बात कही थी कि ऋषि ने आपको आर्य धर्म की रक्षा व प्रचार का कार्य भार सौंपा और यह सोचते हैं कि पं. शान्तिप्रकाश जी, पं. नरेन्द्र जी, हरिश्चन्द्र गुरुजी आयें व प्रचार करें। धर्म प्रचार के लिए निकलो। प्रभु से लगन भी माँगो, धनोपार्जन में ही न लगे रहो।

रोग मुक्त हिन्दू समाज :- हिन्दू समाज की चिन्ता में घुलने वाले, भाषण झाड़ने वाले लीडर व संस्थायें तो बढ़ती जा रही हैं, परन्तु हिन्दू का विनाश करने वालों को तो हाथ पैर हिलाने की आवश्यकता ही नहीं। अपने जटिल रोगों के कारण हिन्दू का ह्रास निरन्तर हो रहा है। कबरों के मुर्दों के आगे करोड़ों हिन्दू नाक रगड़ रहे हैं। रामकृष्ण के मन्दिरों में भीड़ किसने देखी है? पंजाब में फीरोजपुर से

निकलने वाली प्रत्येक बस एक कबर पर रुकती है। दिनभर मेला लगा रहता है। मुर्दों में इतनी जान! जातिवाद के कैंसर से छुटकारा दिलाने के लिये कभी ये हिन्दू मार्का संस्थाओं ने कोई आन्दोलन छेड़ा? संसद में कितने हिन्दूवादी सांसद पूँछ (जाति-पाँति) विहीन हैं? जाति बंधन तोड़ने वाले कितने सांसद हैं? एक ही परमात्मा का उपासक तो सम्भवत: डॉ. सत्यपाल सिंह के अलावा भाजपा में तो कोई हो ही नहीं सकता। टी.वी. पर एक चर्चा में एक प्रवक्ता ने दस्यु, राक्षस व असुर को पृथक्-पृथक् जाति बताया। हिन्दू प्रवक्ता संघ परिवार के स्वयं सेवक इसके प्रतिवाद में यह भी न कह पाये कि आर्ष साहित्य में वैदिक युग में असुर शब्द का अर्थ राक्षस या दुष्ट व्यक्ति नहीं था। दस्यु कामचोर, कर्महीन लुटेरे को कहते हैं। ब्राह्मण घर मे जन्मा व्यक्ति भी दस्यु बन सकता है। पुराणों की कहानियाँ सुनाने वाले जाति रक्षा क्या करेंगे? नागपुर में एक उच्चशिक्षित युवक धर्मच्युत हो गया तो फिर वहाँ वालों को आर्यसमाज की याद आई। घर वापसी का झण्डा उठाने वाले न जाने शिकागो का अंग्रेजी भाषण सुनाते-सुनाते ही थक गये। ईश्वर एक है, एक है और सर्वव्यापक है यह कोई कहता ही नहीं। कांग्रेस वाले वोट बैंक बढ़ाते-बढ़ाते अपने जाल में ही उलझकर लुट गये। नारा दिया ''न जात पर, न पात पर, इन्दिरा जी के हाथ पर'' और जातिवाद को बढ़ावा देकर राजनीति फैलाने व घृणा द्वेष फैलाने में ही इतने वर्ष लगे रहे। अब राहुल जी दलितों के घरों के पते खोज रहे हैं।

दिल्ली का एक उत्साही युवक :- विधर्मी बड़ी चतुराई से हिन्दुओं को भ्रमित व धर्मच्युत करने के लिये नया-नया साहित्य प्रकाशित व प्रसारित कर रहे हैं। दिल्ली में एक उच्च शिक्षित व जीवन में स्थापित युवक को इस अभियान के घातक प्रभाव से बहुत दु:ख पहुँचा। माँ दुर्गा, वैष्णव देवी, काली, गंगा माता की तोता रटन से तो इसका प्रतिकार या उत्तर नहीं दिया जा सकता। उस धर्म प्रेमी जाति भक्त युवक ने अपने प्रयास से यह खोज लिया कि ऋषि दयानन्द की शिष्य परम्परा का कोई व्यक्ति ही इस विषैले साहित्य का उत्तर दे सकता है। उस युवक ने कहीं से मेरा पता निकाल लिया। आर्यसमाज उसके लिये नया है। उसका उत्साह बढ़ाने व उसके दर्द का इलाज करने के लिये उसे जो कुछ चाहिये, मैं पहुँचा रहा हूँ। उसकी भावना का आदर करते हुए शीघ्र हिन्दू जाति को भ्रमित करने वाली एक पुस्तक का उत्तर अति शीघ्र लिखकर प्रकाशित करवाने की व्यवस्था भी करवा दी।

जिनके बस में उत्तर देना है ही नहीं, मैंने उन्हें प्रश्नों के विचित्र उत्तर देते देखा। लेपटैप लेकर बैठने से तो कोई पं. रामचन्द्र देहलवी नहीं बन सकता। गहरी डुबकी लगाने वाले विनम्र दीवाने युवक चाहिये।

वजीर नहीं फकीर के दर्शनार्थ :- प्रेरक प्रसंग देने की माँग आई है। एक बहुत प्यारी घटना याद आ गई। दीनानगर में जमींदारा पार्टी का विशाल सम्मेलन था। पंजाब सरकार के लौह पुरुष चौ. छोटूराम को सुनने दूर-दूर से भारी संख्या में किसान आये। सभा समाप्त होने पर न जाने किसान लीडर कहाँ-कहाँ श्री चौधरी छोटूराम जी को ले जाना चाहते थे। चौधरी जी ने कहा, ''मैं तो स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के दर्शन करने जाऊँगा।'' सरकारी अधिकारी व कई नेता उन्हें मुनि के तपोवन ले गये। पीछे-पीछे सैकड़ों किसान युवक जो दूर-दूर से आये थे, मठ में पहुँच गये। सब घटनायें छोड़कर मुख्य प्रेरक प्रसंग पर आते हैं।

मुनि कुटिया से भक्तप्रवर चौ. छोटूराम जब निकले तो गुरुवर महामुनि स्वतन्त्रानन्द जी भी फूस की कुटी से बाहर निकले। चौ. छोटूराम आशीर्वाद लेकर गुरुदेव से आज्ञा लेकर विदा हुए, परन्तु भारी संख्या में आये युवक वहीं खड़े होकर बालब्रह्मचारी यतिराट की मोहिनी मूर्ति को ही निहारते रहे।

महाराज अपनी गम्भीर मुद्रा में बोले, ''अच्छा! यहाँ वजीर को निकट से अच्छी प्रकार से देखने आये थे। वहाँ तो वह दूर होंगे।''

युवकों ने कहा, ''नहीं स्वामी जी! हम वजीर को देखने यहाँ नहीं आये थे। हम तो उस फकीर को देखने यहाँ आये हैं, जिसके दर्शन करने वजीर यहाँ आया था।''

तब वहाँ आधुनिक ढंग से सी.सी.टी.वी. कैमरे या कम्प्यूटर तो लगे नहीं थे, परन्तु स्वामी जी महाराज का एक अद्भुत कैमरा अवश्य लगा था। उसमें यह सारा दृश्य कैच हो गया। उस कैमरे का नाम था श्री पं. निरञ्जनदेव

इतिहास केसरी।

महर्षि का पत्र व्यवहार :- दिल्ली सभा के पत्र 'आर्य सन्देश' के पन्द्रह फरवरी सन् २०१६ के अंक में पृष्ठ छह पर ग्रन्थ परिचय पर मेरी दृष्टि पड़ गई। इस टाईप में प्रकाशित साहित्य को इस आयु में पढ़ने से मैं बचता हूँ, तथापि विषय के महत्त्व के कारण लेख को पढ़े बिना न रह सका। लेखक ने जो लिखा सो ठीक है। मैंने समझा कि परोपकारिणी सभा द्वारा प्रकाशित ऋषि के पत्र-व्यवहार की समीक्षा होगी, परन्तु ऐसा तो नहीं था तो भी समीक्षक जी (नाम दिया नहीं) के श्रम से पाठकों को अवश्य कुछ लाभ मिलेगा। न जाने समीक्षक जी को पत्र-व्यवहार के प्रकाशन के नये प्रयास की जानकारी है या नहीं।

समीक्षक जी व आर्यजन के लाभार्थ पत्र-व्यवहार के प्रकाशन के आन्दोलन के विस्तृत इतिहास की महत्त्वपूर्ण कड़ियों पर संक्षेप से कुछ लिखने का साहस जुटाता हूँ-

१. इतिहास प्रेमियों की जानकारी के लिए निवेदन किया जाता है कि ऋषि के पत्र-व्यवहार पर एक प्राध्यापक ने पी-एच.डी. भी कर ली है। इसे ३४-३५ वर्ष हो चुके होंगे।

२. ऋषि के पत्रों में दो-दो, तीन-तीन पत्रों के पश्चात् प्रत्येक पत्र में देशोन्नति व जातीय कल्याण की बात मिलेगी।

३. ऋषि के पत्रों के संग्रह का आन्दोलन पं. लेखराम जी ने सोत्साह आरम्भ किया, परन्तु इसे प्रेस में व्यापक रूप देने का श्रेय श्री महाशय कृष्ण जी को प्राप्त हैं। आप ही ने पं. भगवद्दत्त जी द्वारा इस कार्य को हाथ में लेने पर ठोस सहयोग किया। महाशय जी ने प्रकाश में एक के पश्चात् दूसरा पत्र प्रकाशित करके इनकी धूम मचा दी। सरदार रूपसिंह, महात्मा नारायण स्वामी जी, महाकवि नाथूराम जी शर्मा, आचार्य रामदेव जी ने भी पत्र-संग्रह के कार्य में अविस्मरणीय सहयोग दिया।

४. समीक्षक जी ने महात्मा मुंशीराम जी द्वारा प्रकाशित ऋषि दयानन्द के पत्र-व्यवहार को सद्धर्म प्रचारक से जोड़ा है। समीक्षक जी यहाँ भूल कर गये लगते हैं। मेरे विचार में यह सद्धर्म प्रचारक यन्त्रालय गुरुकुल काँगड़ी से मुद्रित तो अवश्य हुआ। वैसे जालन्धर से प्रसारित किया गया।

५. पं. लेखराम जी के पश्चात् श्रद्धेय लक्ष्मण जी, पं. घासीराम जी, श्री हरबिलासजी तथा इन पंक्तियों के लेखक ने ऋषि जीवन में इनका अत्यधिक उपयोग किया।

६. आचार्य रामदेव जी व पं. चमूपति जी ने पत्रों पर गम्भीर चिन्तन करके बहुत ठोस व प्रेरक लेख लिखे। वे सब पुस्तक रूप में न छप सके। इससे हानि हुई।

७. पं. युधिष्ठिर जी मीमांसक ने न केवल पत्रों को सम्पादित ही किया, वे बहुत से पत्र घूम-घूम कर खोजकर भी लाये। इसमें मामराज जी का भी सहयोग रहा। पं. दयाशंकर जी मुम्बई ने भी उन्हें पत्र दिलवाये।

८. समीक्षक जी को पता नहीं होगा कि डॉ. धर्मवीर जी तथा विरजानन्द जी ने बहुत से पत्र खोजकर एक विशेषाङ्क के रूप में प्रकाशित किये। इससे प्रसन्न होकर पूज्य मीमांसक जी ने अपने पास संगृहीत अनेक पत्र डॉ. धर्मवीर जी को भेंट कर दिये।

९. पं. श्रद्धाराम फिलौरी के ऋषि के नाम लिखे पत्र की तो खोज ही धर्मवीर जी तथा विरजानन्द जी ने की। इस पत्र के प्रकाशन से तो इतिहास ही पलट गया।

१०. पं. लेखराम जी ने सर नाहरसिंह के नाम ऋषि का पत्र छापकर अपूर्व सेवा की। उनकी इस दूरदर्शिता से श्रीराम शर्मा का षड्यन्त्र विफल करने में हम सफल हुए।

११. ऋषि के पत्रों में डाक से नहीं, व्यक्ति के हाथ भेजा गया पत्र विशेष महत्त्वपूर्ण है।

१२. आधुनिक युग में केवल महर्षि के पत्र-व्यवहार में श्याम जी कृष्ण वर्मा आदि क्रान्तिकारियों के इतने पत्र छपे हैं।

- वेद सदन, अबोहर, पंजाब- १५२११६

जो खोटे काम करने वाला पुरुष अनेक प्रकार से अपने बल को उन्नति देकर सबको दुःख देना चाहे, उसको राजा सब प्रकार से दण्ड दे। तो भी वह अपनी अन्यन्त खोटाइयों को न छोड़े तो उसको मार डाले अथवा नगर से इसको दूर निकाल बन्द रखे। **-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४४**

विद्वान् स्त्रियों को योग्य है कि अच्छी परीक्षा किए हुए पदार्थ को जैसे आप खायें वैसे ही अपने पति को भी खिलावें कि जिससे बुद्धि, बल और विद्या की वृद्धि हो और धनादि पदार्थों को भी बढ़ाती रहे।-**महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४२**

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग–साधना शिविर

दिनांक : १२ से १९ जून, २०१६

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान–विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों–बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग–साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक–दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।
२. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।
३. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य–सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।
४. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।
५. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि–उद्यान परिसर में ही की जायेगी।
६. बाह्य–वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे समाचार–पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखना, पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।
७. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा सर्दी, खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।
८. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।
९. किसी भी मादक द्रव्य, चाय–कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।
१०. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन–सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।
११. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ–मन्त्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता–बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्–पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है।

ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने-ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ अन्यथा यहाँ भी क्रय किया जा सकता है। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४
email:psabhaa@gmail.com

: मार्ग :

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

-संयोजक

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अत: सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छ: माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें। **-संपादक**

परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें अन्यथा व्यक्ति के नाम से शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। परोपकारिणी सभा आप सभी का सहयोग चाहती है।

यू-ट्यूब पर वीडियो प्रवचन उपलब्ध

वेद एवं आर्ष साहित्य में रुचि रखने वाले आर्यजगत् एवं धार्मिक जनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब यू-ट्यूब पर अनेक वैदिक आर्य विद्वानों के सैंकड़ों नये-नये प्रवचन उपलब्ध हैं। विश्व में कहीं पर भी इन्टरनेट से जुड़ कर ये प्रवचन नि:शुल्क सुने-देखे तथा डाउनलोड किये जा सकते हैं। आप जहाँ भी हैं, यदि आपको वैदिक आर्ष ज्ञान की पिपासा है, वेद एवं आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय के साथ आप इन पर विद्वानों के प्रवचन भी सुनना चाहते हैं, तो इन्टरनेट से जुड़ कर सरलता से सुन सकते हैं।

इसके लिए you tube पर जाकर playlist of paropkarini sabha लिख कर सर्च करें, तो आपको अनेक प्लेलिस्ट मिलेंगी, यथा- वेद प्रवचन, योग दर्शन, ईशोपनिषद् आदि। इनमें इच्छानुसार जाकर लाभ उठाया जा सकता है। आप अपने परिचितों को यह सूचना देकर उन्हें भी लाभ उठाने को प्रेरित कर सकते हैं। भविष्य में अन्य भी नये-नये प्रवचन इस सूची में उपलब्ध कराये जाते रहेंगे।

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगांठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्म तिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नगद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

जैसे मेघ वर्षा समय में अपने जल के समूह से सब पदार्थों को तृप्त करता हुआ उन्नति देता है वैसे ईश्वर भी योगाभ्यास करने वाले योगी पुरुष के योग को अत्यन्त बढ़ाता है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.४०

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

बिना मुख ईश्वर ने वेद ज्ञान कैसे दिया?

- इन्द्रजित् देव

महर्षि दयानन्द व अन्य ऋषियों, महर्षियों व पौराणिकों की इस बात पर सहमति है कि वेद सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर ने चार ऋषियों को दिए। वेद अपौरुषेय हैं। उस समय न तो मुद्रणालय थे, न ही नभ से ईश्वर ने वेद अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा - इन चार ऋषियों के लिए नीचे गिराए, फिर प्रश्न उत्पन्न होना स्वाभाविक है कि ईश्वर जब निराकार है तो बिना मुख व वाणी वाले ईश्वर ने ज्ञान कैसे दिया?

हमारा निवेदन है कि ईश्वर सर्वव्यापक है, शरीर रहित है-

सः पर्यगाच्छुक्रमकायम्। -यजुर्वेद ४०/८

अर्थात् वह ईश्वर सर्वत्र गया हुआ, व्यापक है, शक्तिशाली है, शीघ्रकारी है, काया रहित है, सर्वान्तर्यामी है। इन गुणों के कारण ही ईश्वर ने चार ऋषियों के मन में वेद ज्ञान स्थापित कर दिया था। वह सर्वशक्तिमान् भी है, जिसका अर्थ यही है कि वह अपने करणीय कार्य बिना किसी अन्य की सहायता के स्वयं ही करता है। बिना हाथ-पैर के ईश्वर अति विस्तृत संसार, गहरे समुद्र, ऊँचे-ऊँचे पर्वत, रंग-बिरंगे पुष्प, गैसों के भण्डार, सहस्रों सूर्य व शीतल चन्द्रमा बना सकता है तो सब पदार्थों व सब आत्माओं में उपस्थित अन्तर्यामी ईश्वर बिना मुख वेद ज्ञान क्यों नहीं दे सकता? गोस्वामी तुलसीदास ने भी लिखा है-

बिनु पग चले सुने बिनु काना।
कर बिनु कर्म करे विधि नाना।।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ''ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका'' के ''अथ वेदोत्पत्तिविषयः'' अध्याय में लिखते हैं- ''जब जगत् उत्पन्न नहीं हुआ था, उस समय निराकार ईश्वर ने सम्पूर्ण जगत् को बनाया। तब वेदों के रचने में क्या शंका रही?.....हमारे मन में मुखादि अवयव नहीं है, तथापि उसके भीतर प्रश्नोत्तर आदि शब्दों का उच्चारण मानस व्यापार में होता है, वैसे ही परमेश्वर में भी जानना चाहिए।''

जैसे मनुष्य शरीर से श्वास बाहर निकालता तथा पुनः श्वास भीतर ले लेता है, इसी प्रकार ईश्वर सृष्टि के आरम्भ में वेदों को प्रकाशित करता है । प्रलयावस्था में वेद नहीं रहते, परन्तु ईश्वर के ज्ञान में वेद सदैव बने रहते हैं। वह ईश्वर की विद्या है। वह सर्वशक्तिमान् व अन्तर्यामी है, मुख और प्राणादि बिना भी ईश्वर में मुख व प्राणादि के करने योग्य कार्य करने का सामर्थ्य है।

जब भी हम कोई कार्य करने लगते हैं, तब मन के भीतर से आवाज-सी उठती है। वह कहती है-यह पाप कर्म है अथवा पुण्य कर्म है। यह आवाज बिना कान हम सुनते हैं, क्योंकि यह आवाज बाहर से नहीं आती। यह आवाज विचार के रूप में आती है। यह कार्य शरीरधारी व्यक्ति नहीं करता, न ही कर सकता है। यदि कोई शरीरधारी यह कार्य करेगा तो कर नहीं सकेगा, क्योंकि उसे मुख की आवश्यकता रहेगी। महर्षि दयानन्द जी ''अथ वेदोत्पत्ति विषयः'' अध्याय में यह भी लिख गए हैं-'किसी देहधारी ने वेदों को बनाने वाले को साक्षात् कभी नहीं देखा, इससे जाना गया कि वेद निराकार ईश्वर से ही उत्पन्न हुए हैं।.....अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा- इन चारों मनुष्यों को जैसे वादित्र (=बाजा, वाद्य) को कोई बजावे, काठ की पुतली को चेष्टा करावे, इसी प्रकार ईश्वर ने उनको निमित्त मात्र किया था।'

इस विषय में स्व. डॉ. स्वामी सत्यप्रकाश जी का कथन भी उल्लेखनीय है-आप कहीं नमक भरा एक ट्रक खड़ा कर दीजिए, परन्तु एक भी चींटी उसके पास नहीं आएगी। इसके विपरीत यदि एक चम्मच खाण्ड या मधु रखेंगे तो दो-चार मिनटों में ही कई चींटियाँ वहाँ आ जाएगी। मनुष्य तो चखकर ही जान पाता है कि नमक यह है तथा खाण्ड वह है, परन्तु चींटियों को यह ज्ञान बिना चखे होता है। ईश्वर बिना मुख उन्हें यह ज्ञान देता है। आपने चींटियों को पंक्तिबद्ध एक ओर से दूसरी ओर जाते देख होगा। चलते-चलते वे वहाँ रुक जाती हैं, जहाँ आगे पानी पड़ा होता है अथवा बह रहा होता है। क्यों? पानी में बह जाने का, मर जाने का उन्हें भय होता है। प्राण बचाने हेतु पानी में न जाने का ज्ञान उन्हें निराकार ईश्वर ही देता है। मुख से बोलकर ज्ञान देने का प्रश्न वहाँ भी लागू नहीं होता, क्योंकि ईश्वर काया रहित है तो मुख से बोलेगा कैसे ? वह तो चींटियों के मनों में वाञ्छनीय ज्ञान डालता है।

गुरुकुल काँगड़ी, हरिद्वार के पूर्व आचार्य व उपकुलपति

श्री प्रियव्रत जी अपनी एक पुस्तक में लिखते हैं कि मैस्मरो नामक एक विद्वान् ने ध्यान की एकाग्रता के लिए दूसरे व्यक्ति को प्रभावित करने की विद्या सीखी-आविष्कार किया। यह मैस्मरिज्म विशेषज्ञ दूसरे व्यक्ति पर मैस्मरिज्म करके स्वयं बिना बोले ही उससे मनचाही भाषा बुलवा सकता है, चाहे दूसरा व्यक्ति उस भाषा को न जानता हो, चाहे वह भाषा चीनी हो या जर्मनी, जापानी या कोई अन्य भाषा हो। इस विद्या का विशेषज्ञ दूसरे व्यक्ति के मन में अपनी बात डाल देता है।

इस विषय में एक घटना रोचक व प्रेरक है। गुरुकुल काँगड़ी के पूर्व उपकुलपति स्व. डॉ. सत्यव्रत सिद्धांतालंकार जब स्नातक बन कर गुरुकुल से निकले थे तो लुधियाना में एक दिन उन्होंने देखा कि बाजार में एक मौलवी मंच पर खड़ा होकर ध्वनि विस्तारक यन्त्र के आगे बोल रहा था- ''आर्य समाजी कहते हैं कि खुदा निराकार है तथा वेद का ज्ञान खुदा ने दिया था। मैं पूछता हूँ कि जब निराकार है तो बिना मुँह खुदा ने वेद ज्ञान कैसे दिया?''डॉ. सत्यव्रत सिद्धांतालंकार मौलवी के निकट जा खड़े हुए और दोनों की जो बातचीत हुई, वह इस प्रकार की थी-

''आपने यह लाउडस्पीकर किस लिए लगा रखा है?''

''अपनी बात दूर खड़े लोगों तक पहुँचाने के लिए।''

''यदि दूर खड़े व्यक्ति आपके निकट आ जाएँ तो क्या फिर भी आप इसका प्रयोग करेंगे?''

''नहीं, तब इसकी जरूरत नहीं पड़ेगी। तब मैं पास खड़े आदमी से ऊँची आवाज में नहीं बोलूँगा।''

''यदि आपकी बात सुनने वाला व्यक्ति आपके अन्दर ही स्थित हो जाए, तब भी क्या आपको उससे बात करने के लिए मुँह की आवश्यकता पड़ेगी?''

''नहीं, तब मुझे मुँह की जरूरत नहीं रहेगी।''

''बस, यही उत्तर है, आपके प्रश्न का। ईश्वर सबमें है तथा सबमें ईश्वर है। वह सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक तथा सर्वान्तर्यामी है। उसके साथ बात करने के लिए मनुष्य को मुख की आवश्यकता नहीं पड़ती तथा न ही ईश्वर को हमसे बात करने के लिए मुख की अपेक्षा है। वेद का ज्ञान ईश्वर ने ४ ऋषियों को उनके मनों में बिना मुख दिया था।''

मौलवी मौन हो गया। मेरी लेखनी भी मौन हो रही है।

- चूना भट्ठियाँ, सिटी सेन्टर के निकट, यमुनानगर, हरि.

रक्तसाक्षी पं. लेखराम जी:- १२० वें बलिदान पर्व पर

बोली खंजर की धार

- राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

तेरी जय जय जयकार, गावे सारा संसार।
जागा सारा संसार तेरी सुनकर हुँकार।।
निर्भय योद्धा संग्रामी, वैदिक पथ के अनुगामी।
दु:खड़े जाति के टारे, प्यारे ज्ञानी नरनामी।।
सच्चे ईश्वर विश्वासी, झेले सङ्कट हजार.....
तेरे साहस पे वारी, तुझ पर प्यारे बलिहारी।
तू था ऋषियों की तान, दुनिया जाने यह सारी।।
तजकर सारे सुखसाज, कीन्हा जीवन सञ्चार.....
युग ने करवट जो बदली, काँपे सारे अन्यायी।
रोते देखे मिर्जाई, तर गई तेरी तरुणाई।।
आई बनकर वरदान, तीखी छुरियों की धार.....

तेरा सुनकर सिंहनाद, जागे जो ये अरमान।
शत्रु हो गये हैरान, आई जाति में जान।।
परहित जीना मरना, तेरे जीवन का सार.....
तेरा ऋण कितना भारी, जग के सच्चे हितकारी।
करते याद नर-नारी, चावापायल[१] की गाड़ी।।
चलती गाड़ी से कूदे, लेकर उर में अंगार.....
पथिक! निराली देखी, तेरी वीरों में शान।
करते मिलकर गुणगान, करते हम सब अभिमान।।
देता जन-जन को जीवन, तेरा निर्मल आचार.....
रहना सेवा में तत्पर, चाहे दिन हो या रात।
हम हैं मस्तक झुकाते, सुन-सुन तेरी हर बात।।
भूलें कैसे? प्यारे! तेरा दलितों से प्यार.....

स्वामी श्रद्धानन्द शूर, जिनके मुखड़े पे नूर।
'नाथू'[२] 'तुलसी'[३] खोजें तेरे चरणों की धूर।।
बोले खंजर की धार, तेरा फूले परिवार.....
कर दो जाति के वीरो, उसके सपने साकार।
करके तन, मन, बलिदान, करिये सबका उद्धार।।
आओ गायें 'जिज्ञासु', गूँजे सारा संसार.....।

टिप्पणी

१. चावापायल स्टेशन पर पण्डित जी गाड़ी से कूदे थे। २. हुतात्मा नाथूराम ३. हुतात्मा तुलसीराम।

- वेद सदन, अबोहर, पंजाब- १५२११६

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में पिछले लगभग तीन वर्ष से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ नि:शुल्क दी जाती हैं। ऋषि उद्यान में रह रहे डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

१. बैंक का नाम–**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या–**10158172715**

IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम–**आई.डी.बी.आई**, पावर हाऊस के सामने,

जयपुर रोड़, अजमेर।

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या–**091104000057530**

IFSC-IBKL0000091

email : psabhaa@gmail.com

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

आस्था भजन (चैनल) पर आर्य विद्वानों के प्रवचन

स्वामी रामदेव जी जन–जन के कल्याण को ध्यान में रखते हुए वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार के लिए 'आस्था–भजन' चैनल पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे तक दो घण्टे के बीच वैदिक विद्वानों के प्रवचनों को प्रसारित करवा रहे हैं।

इस कार्य में परोपकारिणी सभा द्वारा भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। परोपकारिणी सभा द्वारा प्रवचनों की आपूर्ति के लिए ऋषि उद्यान में रिकॉर्डिंग–यूनिट चल रही है और लगातार नित नये प्रवचनों की रिकॉर्डिंग की जा रही है। परोपकारिणी सभा ये प्रवचन आस्था–भजन (चैनल) को प्रदान कर रही है।

इन दिनों 'आस्था–भजन' (चैनल) पर प्रतिदिन सायं ७ से ७.२० बजे तक **आचार्य धर्मवीर** के वेद–प्रवचन, ७.३० से ७.५० तक **स्वामी विष्वङ्** के योगदर्शन प्रवचन, ८.३० से ८.५० तक **आचार्य सत्यजित्** के प्रवचन प्रसारित हो रहे हैं। इसी प्रकार आगे भी 'आस्था–भजन' पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे के बीच अन्य विद्वानों के व अन्य विषयों पर प्रवचन प्रसारित होते रहेंगे।

धर्मप्रेमी जन इन प्रवचनों का अधिकाधिक लाभ उठाएँ और अन्यों को भी अधिकाधिक सूचित करें।

'आस्था–भजन' (चैनल) डिश–टी.वी. और डी.टी.एच. पर उपलब्ध है, किन्तु टाटा–स्काई, वीडियोकोन, बिग–टी.वी. आदि पर नहीं आ रहा है। जिनके पास ये नहीं आ रहा है, वे अपने प्रसारक (सर्विस प्रोवाइडर) को बार–बार कह कर प्रेरित करते रहें, जिससे कि ये भी आस्था भजन को प्रसारित करने लगें। ऐसा करके वैदिक–धर्म के प्रचार–प्रसार में आप भी सहयोग प्रदान कर सकते हैं। जो केबल से देखते हैं, वे भी अपने केबल ऑपरेटर को कह कर आस्था भजन आरम्भ करवा सकते हैं।

हम शाकाहारी क्यों बनें?

- डॉ. गोपालचन्द्र दाश

गर्मी का महीना है। गर्मी की छुट्टी के कारण सभी स्कूल बन्द हैं। एक लड़का अपने मामाजी के घर घूमने आया। उसके मामा ने उससे कहा कि एक कबूतर को पकड़कर लाओ। उसके मामा मांसाहारी थे। वे कबूतर की हत्या करके उसके मांस को पकाकर खाना चाहते थे। इसी शंका से लड़के ने कबूतर को पकड़ने के लिए पहले मना कर दिया था। उसके मामा ने भरोसा दिलाया कि वे कबूतर की हत्या नहीं करेंगे। आखिर मासूम लड़के ने कबूतर को पकड़ कर मामाजी को सौंप दिया। मामा अपने आश्वासन से मुकर गए और उसी रात कबूतर की हत्या करके उसके मांस से व्यंजन बनाए। यह घटना जानकर उस लड़के को बहुत मानसिक कष्ट हुआ। इसने उसके मन को उद्वेलित किया। रात में खाने के लिए बुलाने पर उसने सीधा मना कर दिया। रात भर बिना भोजन किए सोया। परिवार के सभी लोग लड़के से प्यार करते थे। उसका समर्थन करते हुए परिवार के दूसरे लोगों ने भी रात में भोजन नहीं किया। अगले दिन मामाजी को ज्ञात हुआ कि परिवार के सभी लोग उपवास पर हैं। मामाजी ने अपनी गलती को महसूस किया। लड़के के सामने उन्होंने कसम खायी कि भविष्य में कभी जीवहत्या नहीं करेंगे। वे पूर्ण शाकाहारी बन गए। अपने परिवार के बुजुर्ग लोगों के हृदय में संपूर्ण परिवर्तन लाने के कारण उक्त शाकाहारी बालक स्वाधीन भारत का प्रधानमंत्री बना। भारत के उस महान् सपूत का नाम है लाल बहादुर शास्त्री।

कुछ दिन पहले किसी एक दैनिक समाचार पत्र में रंगीन विज्ञापन प्रकाशित हुआ था। उक्त विज्ञापन की विषयवस्तु पढ़ने से मन दु:ख से खिन्न हो गया। अँग्रेजी में लिखित विज्ञापन की विषयवस्तु इस प्रकार थी:- Dear meat lovers, We bring to you best desi khassi kids between the age of 6 to 8 months only reach your plate. Please contact.....विज्ञापन में एक सुन्दर मेमने की तस्वीर बनी थी। इसका आशय यह है कि ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए यह एक व्यवसायिक चाल थी। अपनी जीभ की लालसा को तृप्त करने के लिए मांसाहार करने के कारण ग्राहकों को समाज में उस तरह का विज्ञापन दृष्टिगत होता है। भुवनेश्वर की सड़क की पगडंडी के अधिकांश स्थान पर विज्ञापन पट्ट पर लिखा हुआ है- ''मिट्टी के बर्तन में पकाया गया मांस और भात (बिरयानी)''। इस तरह का विज्ञापन मांसाहार को प्रोत्साहित करता है। मानव शरीर के लिए मांसाहार अनुकूल है या नहीं, यह बात जानने से पहले यह जानना चाहिए कि आदमी जीभ के स्वाद के लिए खाता है। मांसाहारी व्यक्ति प्रत्यक्ष रूप से जीव हत्या नहीं करने के बावजूद वह निश्चित रूप से महापाप में मुख्य भूमिका निभाता है।

बच्चा प्रसव के पश्चात् माँ का दूध पीता है। माँ का दूध उपलब्ध न होने से माँ के घरवाले गाय के दूध की व्यवस्था करते हैं। इसलिए मनुष्य जन्म से शाकाहारी है। आयु के बढ़ने के बाद परिवार और समाज के प्रभाव से व्यक्ति मांसाहारी बन जाता है। समाज में विद्यमान कुशिक्षा उस की जड़ है। शरीर की संरचना की दृष्टि से मानव शरीर शाकाहारी भोजन के लायक है। उदाहरण के तौर पर-

१. मांसाहार करनेवाले प्राणी की लार में अम्ल की मात्रा अधिक होती है।

२. मांसाहारी प्राणी के रक्त की रासायनिक स्थिति (पी.एच.) कम है अर्थात् अम्लयुक्त है। शाकाहारी प्राणी के रक्त का पी.एच. ज्यादा है अर्थात् क्षारयुक्त है।

३. मांसाहारी प्राणी के रक्त में स्थित लिपोप्रोटीन शाकाहारी प्राणी से अलग होता है। शाकाहारी प्राणी का लिपोप्रोटीन मनुष्य जैसा होता है।

४. मांस की पाचन क्रिया में मांसाहारी प्राणी के आमाशय में उत्पन्न हाइड्रोक्लोरिक एसिड की मात्रा मनुष्य की तुलना में दस गुणा होती है। मनुष्य और अन्य प्राणियों के आमाश्य में उत्पन्न अम्ल (एसिड) की मात्रा कम होने के कारण मांस की पाचन क्रिया में बाधा उत्पन्न होती है।

५. मांसाहारी प्राणी की आंत्रनली की लम्बाई छोटी

और शरीर की लम्बाई के बराबर होती है। आंत्रनलिका छोटी होने के कारण मांस शरीर में विषैला होने से पहले बाहर निकल जाता है, परन्तु मनुष्य और अन्य शाकाहारी प्राणियों की आंत्रनली की लम्बाई शरीर की लम्बाई से चार गुणा अधिक होती है, इसलिए मांसाहार से उत्पन्न विषैला तत्त्व शरीर से सहज ढंग से निकल नहीं सकता है, इसलिए शरीर रोगाक्रान्त हो जाता है। मांसाहार से उत्पन्न प्रमुख रोग हैं-उच्च रक्तचाप, मधुमेह, हृदयरोग, गुर्दे का रोग, गठिया, अर्श, एक्जीमा, अलसर, गुदा और स्तन कर्कट आदि।

६. शिकार को सहज ढंग से पकड़ने के लिए मांसाहारी प्राणी की जीभ कंटीली, दाँत पैने और ऊँगलियों में पैने नाखून होते हैं। लेकिन शाकाहारी प्राणी की जीभ चिकनाईयुक्त, चौड़े दाँत और नाखून आयताकार जैसे होते हैं। शाकाहारी प्राणी होंठ के सहारे पानी पीता है, परन्तु मांसाहारी प्राणी जीभ से पानी पीता है।

७. मांसाहारी प्राणी की जीभ ऊपर और नीचे की और गतिशील होती है। इसलिए वे बिना चबाकर भोजन को निगल लेते हैं, इसके विपरीत शाकाहारी प्राणियों की जीभ चारों दिशाओं में गतिशील होती है। इसलिए वे भोजन को चबाकर खाते हैं।

८. मांसाहारी भोजन से शरीर में उत्पन्न अधिक वसा आदि के निर्गत के लिए उनके यकृत और गुर्दे का आकार बड़ा होता है। शाकाहारी प्राणियों के ऐसे अंग-प्रत्यंग छोटे होने की वजह से धमनी में एथेरोक्लेरोसिम जैसे रोग उत्पन्न होते हैं।

९. शाकाहारी की तुलना में मांसाहारी जीव की घ्राणशक्ति तेज तथा आवाज कठोर और भयानक होती हैं। ऐसे गुण उन्हें शिकार के लिए मदद करते हैं।

१०. मांसाहारी प्राणी की संतान जन्म के बाद एक सप्ताह तक दृष्टिहीन होती हैं। मनुष्य की तरह अन्य शाकाहारी पशु की संतान जन्म के बाद देख सकती हैं। ऐसे सभी विश्लेषण से ज्ञात होता है कि मानव शरीर की संरचना अन्य मांसाहारी प्राणियों से भिन्न होती हैं और शाकाहारी प्राणियों के अनुरूप होती हैं। इसलिए मनुष्य हमेशा एक शाकाहारी प्राणी है।

मनुष्य से भिन्न दुनिया का अन्य कोई भी प्राणी अपनी शारीरिक संरचना एवं स्वभाव के विपरीत आचरण नहीं करता है। उदाहरण के रूप में बाघ भूखा रहने पर भी शाकाहारी नहीं बनता है अथवा गाय भूख के कारण मांसाहार नहीं करती है। कारण यह कि ऐसा उनके स्वभाव के अनुकूल नहीं है, परन्तु मनुष्य जैसे विवेकशील एवं बुद्धिमान् प्राणी में इस तरह के प्रतिकूल स्वभाव पाए जाते हैं। मनुष्य का भोजन केवल पेट भरने तथा स्वाद तक सीमित नहीं है। यह मनुष्य के शारीरिक, मानसिक, चरित्रगत तथा बौद्धिक स्वास्थ्य के विकास में मुख्य भूमिका निभाता है। इसके लिए कहा गया है- ''जैसा अन्न, वैसा मन''। भोजन में रोग उत्पन्न करनेवाला, स्वास्थ्य को बिगाड़नेवाला और उत्तेजक पदार्थ रहने से वह शरीर के लिए हानिकारक होता है तथा शरीर के लिए विजातीय तत्त्वों को बाहर निकालने में रुकावट पैदा करता है। भोजन ऐसा होना चाहिए जिससे कि शरीर से अनावश्यक तत्त्व शीघ्र बाहर निकलने के साथ-साथ रोगनिरोध शक्ति उत्पन्न हो। पेड़ पौधों से बनाए जाने वाले शाकाहारी भोजन में पर्याप्त रेशा (फाइबर) होने के कारण यह कब्ज को दूर करने के साथ-साथ अनावश्यक पदार्थ जैसे:- अत्यधिक वसा (फैट) और सुगर आदि मल के रूप में निर्गत करवाता हैं। इसी वजह से व्यक्ति को मधुमेह और उच्च रक्तचापआदि रोगों से मुक्ति मिलती है। मांसाहारी खाद्य की तुलना में शाकाहारी खाद्य में स्वास्थ्यवर्धक पदार्थों की मात्रा अधिक होती है। यह व्यक्ति को स्वस्थ, दीर्घायु, निरोग और हृष्टपुष्ट बनाता है। शाकाहारी व्यक्ति हमेशा ठंडे दिमागवाले, सहनशील, सशक्त, बहादुर, परिश्रमी, शान्तिप्रिय आनन्दप्रिय और प्रत्युत्पन्नमति होते हैं। वे अधिक समय बिना भोजन के रहने की क्षमता रखते हैं। इसलिए उनके पास दीर्घ समय तक उपवास करने की क्षमता है। उदाहरण स्वरूप भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र भाई मोदी ने इस वर्ष नवरात्रि पर्व के दौरान अपनी अमेरीका यात्रा के दौरान लगातार पाँच दिनों तक उपवास करके केवल गर्म पानी पी कर धाराप्रवाह भाषण के माध्यम से दिन-रात अनेक सभाओं को बिना अवसाद सम्बोधित किया था। यह घटना विश्ववासियों को आश्चर्यचकित करती थी।

शाकाहारी भोजन न केवल शक्ति प्रदायक होता है, यह आर्थिक दृष्टि से किफायती भी है। शाकाहारी भोजन द्वारा पशुधन सुरक्षित होने के साथ-साथ इसका सही उपयोग होता है। गौ पशुधन से प्राप्त दूध, दूध-सम्बन्धी उत्पाद, गोबर खाद, ईंधन गैस और विद्युत ऊर्जा उत्पन्न होती हैं। मुर्गी वातावरण की संरक्षा और मछली जल का शोधन करती है। इसके विपरीत यदि शाकाहारी प्राणी प्रतिदिन मांसाहार करता है तो इतनी मात्रा में अम्ल और जहरीला पदार्थ उत्पन्न होंगे तो शारीरिक क्रिया को क्रमशः ठप करा देंगे। उससे व्यक्ति अल्पायु होता है। उदाहरण के तौर पर भौगोलिक परिवेश के अनुरूप मांसाहार से जीवनयापन करने के कारण एस्किमों की औसत आयु सिर्फ ३० वर्ष होती है। कसाईखाने में मासूम जानवर अपनी आत्मरक्षा का प्रयास करते हुए छटपटाता है। भय और आवेग से पशु के शरीर से अत्यधिक मात्रा में आड्रेनलीन उत्पन्न होता है। यह एक उत्तेजक हारमोन है। इससे पशु का मांस विषैला बन जाता है। उक्त मांस को खानेवाला व्यक्ति हमेशा सामान्य उत्तेजक स्थिति में उत्तेजित होता हैं एवं क्रुद्ध बन जाता है। मांसाहार से सम्बद्ध अन्य बुरी आदतें हैं जैसे- मदिरा पान, धूमपान। मांस और मदिरा के चपेट में आकर मनुष्य अज्ञात रूप से बहुत कुकर्म करता है।

विगत दिनों की घटनाओं पर चिंतन करने पर यह पाया गया है कि वाइरसजन्य बर्ड फ्लू और स्वाइन फ्लू समग्र विश्व में बारबार महामारी का रूप लेते हैं। ये रोग मुर्गियों और सूअरों के माध्यम से मनुष्य को संक्रमित करते हैं। उपर्युक्त पक्षी और जानवर का मांसाहार इसका प्रमुख कारण है। शाकाहारी जीवन शैली से इन रोगों का संपूर्ण निराकरण किया जा सकता है। मछलियों, मांस और अण्डों को सुरक्षित रखने के लिए व्यवहृत विभिन्न किस्म के रसायन मनुष्य शरीर के लिए हानिकारक हैं। परीक्षा से इस बात की पुष्टि की गई हैकि यदि अण्ड़े को आठ डिग्री सेंटिग्रेड से अधिक तापमान में बारह घंटे से अधिक समय के लिए रखा जाता है तो अन्दर से अण्डे की सड़न प्रक्रिया शुरू हो जाती है। भारत जैसे ग्रीष्म मंडलीय जलवायु में अण्डे को निरन्तर वातानुकूलित व्यवस्था में रखा जाना संभव नहीं हो पाता है। ये वाइरस, टाइफाइड और खाद्य सामग्री को विषैला बना देते हैं। लिस्टेरिया वाइरस गर्भवती महिलाओं में गर्भपात की समस्या तथा गर्भस्थ शिशु में रोग उत्पन्न करता है।

मनुष्य सभी प्राणियों में श्रेष्ठ है। अहिंसा मानव का परम धर्म है। सभी धर्मों में जीवहत्या का विरोध किया गया है। जीवहत्या के बिना मांसाहार असंभव है। दया और विनम्रता गुण मनुष्य के भूषण होते हैं। निर्दयता मनुष्य को जीवहत्या के लिए प्रेरित करती है। यह मनुष्य का गुण नहीं है, अवगुण है। महात्मा बुद्ध, वर्धमान महावीर, महर्षि दयानन्द, संत कबीर और राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जैसे महापुरुषगण जीवहत्या का विरोध करते थे और कहते थे कि मांस की खरीद करने वाला आदमी मांसाहार करने वाले आदमी की तरह दोषी हैं।

वर्तमान समाज में परिवर्तन की लहर आई है। पाश्चात्य देश के लोग हमारी संस्कृति से प्रभावित होकर धीरे-धीरे शाकाहारी बन रहे हैं, परन्तु हम लोग विपरीत आचरण कर रहे हैं। जन जागरण के लिए वर्तमान केबिनेट मंत्री श्रीमती मेनका गाँधी समाचार पत्रों और दूरदर्शन के माध्यम से मांसाहार के कुपरिणाम और शाकाहार के लाभ के बारे में निरन्तर अपने विचार व्यक्त करती आ रही हैं। कनाडा के अनुसंधानकर्त्ताओं की एक टीम ने ५ सालों के परीक्षण के बाद 'अम्बलीडमा अमेरिकनस' नाम से एक कीड़े का आविष्कार किया है। ठंडे परिवेश में अपने वंश का विस्तार करने वाला कीड़ा यदि आदमी को काट देता है तो उसके शरीर में एक अस्वाभाविक परिवर्तन होता है।

मनुष्य की भावना उसके कर्म को प्रभावित करती है। जिस व्यक्ति में अहिंसा, दया, क्षमा और उपकार करने की भावना है, वह अन्य किसी प्राणी को दर्द देनेवाला निर्दय कर्म नहीं करेगा। प्राणी के कष्ट को हृदय में महसूस करने वाला व्यक्ति मांसाहार करेगा, इसकी कल्पना कभी भी नहीं की जा सकती है, तो आइए, हम सब शाकाहारी बनें। - **अपर स्वास्थ्य निदेशक, पूर्व तट रेल्वे, भुवनेश्वर।**

सब व्यवहार करने वालों को चाहिये कि जो मनुष्य जिस काम में चतुर हो उसको उसी काम में प्रवृत्त करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.२०

वैदिक पुस्तकालय अजमेर
द्वारा प्रकाशित नये संस्करण

१. महर्षि दयानन्द का पत्र-व्यवहार (२ भाग में)

मूल्य - रु. ८००/- पृष्ठ संख्या - प्रथम व द्वितीय भाग-६९६+६९६

ऐतिहासिक महत्त्व का ग्रन्थ है। इस संस्करण की यह विशेषता है कि पत्र और उसका उत्तर साथ-साथ दिये गए हैं। आर्य जाति और आर्यावर्त्त के उत्थान की महती आकांक्षा ऋषिवर के पत्रों में स्पष्ट झलकती है। माननीय डॉ. वेदपाल जी द्वारा सम्पादित यह ग्रन्थ पठनीय एवं संग्रहणीय है। साज-सज्जा और मुद्रण भी उत्तम है। समाप्त होने से पहले- पहले क्रय कर लेवें तो अच्छा रहेगा।

२. 'नवयुग की आहट',महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन-चरितः

मूल्य - रु. ६०/- पृष्ठ संख्या- १९२

१०० से अधिक उपशीर्षकों एवं १३ अध्यायों में लिखा गया ऋषि का यह अनुपम जीवन चरित है। लेखक हैं- ऋषि मिशन के दीवाने, आर्यजाति के प्रहरी, दिल जले आर्य साहित्यकार प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु। पुस्तक में आप जान पायेंगे कि ऋषि का पाखण्ड-खण्डन, सामाजिक दोषों के निराकरण, स्त्री-शिक्षा, अछूतोद्धार, वेदोद्धार, सामाजिक पुनर्जागरण, राष्ट्र-उद्धार के क्षेत्र में क्या योगदान है तथा उनके समकालीन और परवर्ती महापुरुष उनके विषय में क्या कहते हैं।

३. इतिहास की साक्षीः लेखक- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

मूल्य - रु. ५०/- पृष्ठ संख्या - ९६

९६ पृष्ठों की इस पुस्तक में विद्वान् लेखक ने महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं पं. श्रद्धाराम फिल्लौरी के सम्बन्ध में तथ्यात्मक जानकारी दी है। श्रद्धाराम फिल्लौरी के हाथ के लिखे पत्र की एवं अन्य ऐतिहासिक दस्तावेजों की फोटो कापियाँ इसमें दी हैं, जो अन्यथा दुर्लभ हैं।

४. आत्म कथा- महर्षि दयानन्द सरस्वती

मूल्य - रु. १५/- पृष्ठ संख्या - ४८

५. जिज्ञासा-विमर्श लेखक-आचार्य सोमदेव

मूल्य - रु. १००/- पृष्ठ संख्या - २५८

आध्यात्मिक क्षेत्र में सूक्ष्म दार्शनिक सिद्धान्तों के सम्बन्ध में उठने वाले प्रश्नों का शास्त्रीय एवं तर्क-सम्मत समाधान इस ग्रन्थ में किया गया है। आत्मा, परमात्मा, मोक्ष आदि विषयों से सम्बन्धित प्रश्न बहुत जटिल होते हैं। विद्वान् लेखक ने अपने विस्तृत स्वाध्याय एवं ऊहा के बल पर ऐसे सभी प्रकरणों में सम्यक् समाधान प्रस्तुत किया है। पुस्तक पठनीय एवं संग्रहणीय है। कालान्तर में सन्दर्भ हेतु काम आने वाला ग्रन्थ सिद्ध होगी, क्योंकि अधिकांश समाधान महर्षि कृत ग्रन्थों, वेदों एवं वेदानुकूल आर्ष ग्रन्थों के आधार पर किये गए हैं। वैदिक सिद्धान्तों की पुष्टि की दृष्टि से भी यह एक उपयोगी पुस्तक है।

होली - क्या, क्यों, कैसे?

- डॉ. रूपचन्द्र 'दीपक'

होली आजकल असभ्यता का त्योहार माना जाने लगा है। यहाँ तक कि सभ्य एवं शिष्ट व्यक्ति इससे बचने लगे हैं। ऐसा इस कारण हुआ, क्योंकि इसका रूप विकृत हो गया है, अन्यथा यह भी चार प्रमुख त्योहारों में से एक है। अन्य तीन त्योहार हैं- रक्षाबन्धन, विजयदशमी एवं दीपावली। वास्तव में होली आरोग्य, सौहार्द एवं उल्लास का उत्सव है। यह फाल्गुन मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है और आर्यों के वर्ष का अन्तिम त्योहार है। यह नई ऋतु एवं नई फसल का उत्सव है। इसका प्रह्लाद एवं उसकी बुआ होलिका से कोई सम्बन्ध नहीं है। होलिका की कथा प्रसिद्ध अवश्य है, किन्तु वह कथा इस उत्सव का कारण नहीं है। यह उत्सव तो प्रह्लाद एवं होलिका के पहले से मनाया जा रहा है।

होली क्या है? होली नवसस्येष्टि है (नव= नई, सस्य= फसल, इष्टि= यज्ञ) अर्थात् नई फसल के आगमन पर किया जाने वाला यज्ञ है। इस समय आषाढ़ी की फसल में गेहूँ, जौ, चना आदि का आगमन होता है। इनके अधभुने दाने को संस्कृत में 'होलक' और हिन्दी में 'होला' कहते हैं। शब्दकल्पद्रुमकोश के अनुसार-

तृणाग्निभ्रष्टार्द्धपक्वशमीधान्यं होलकः।
होला इति हिन्दी भाषा।

भावप्रकाश के अनुसार-

अर्द्धपक्वशमीधान्यैस्तृणभ्रष्टैश्च होलकः
होलकोऽल्पानिलो मेदकफदोषश्रमापहः।

अर्थात् तिनकों की अग्नि में भुने हुए अधपके शमीधान्य (फली वाले अन्न) को होलक या होला कहते हैं। होला अल्पवात है और चर्बी, कफ एवं थकान के दोषों का शमन करता है। 'होली' और 'होलक' से 'होलिकोत्सव' शब्द तो अवश्य बनता है, किन्तु यह नामकरण वैदिक उत्सव का वाचक नहीं है।

होली नई ऋतु का भी उत्सव है। इसके पन्द्रह दिन पश्चात् नववर्ष, चैत्र मास एवं वसन्त ऋतु प्रारम्भ होती है। कुछ विद्वानों के अनुसार नववर्ष का प्रथम दिवस वसन्त ऋतु का मध्य-बिन्दु है। दोनों ही अर्थों में होली का समय स्वाभाविक हर्षोल्लास का है। इस समय ऊनी वस्त्रों का स्थान सूती एवं रेशमी वस्त्र ले लेते हैं। शीत के कारण जो व्यक्ति बाहर निकलने में संकोच करते हैं, वे निःसंकोच बाहर घूमने लगते हैं। वृक्षों पर नये पत्ते उगते हैं। पशुओं की रोमावलि नई होने लगती है। पक्षियों के नये 'पर' निकलते हैं। कोयल की कूक एवं मलय पर्वत की वायु इस नवीनता को आनन्द से भर देती है। इतनी नवीनताओं के साथ आने वाला नया वर्ष ही तो वास्तविक नव वर्ष है, जो होली के दो सप्ताह बाद आता है। इस प्रकार होलकोत्सव या होली नई फसल, नई ऋतु एवं नव वर्षागमन का उत्सव है।

होली के नाम पर लकड़ी के ढेर जलाना, कीचड़ या रंग फेंकना, गुलाल मलना, स्वाँग रचाना, हुल्लड़ मचाना, शराब पीना, भाँग खाना आदि विकृत बातें हैं। सामूहिक रूप से नवसव्येष्टि अर्थात् नई फसल के अन्न से बृहद् यज्ञ करना पूर्णतः वैज्ञानिक था। इसी का विकृत रूप लकड़ी के ढेर जलाना है। गुलाब जल अथवा इत्र का आदान-प्रदान करना मधुर सामाजिकता का परिचायक था। इसी का विकृत रूप गुलाल मलना है। ऋतु-परिवर्तन पर रोगों एवं मौसमी बुखार से बचने के लिए टेसू के फूलों का जल छिड़कना औषधिरूप था। इसी का विकृत रूप रंग फेंकना है। प्रसन्न होकर आलिंगन करना एवं संगीत-सम्मेलन करना प्रेम एवं मनोरंजन के लिए था। इसी का विकृत रूप हुल्लड़ करना एवं स्वाँग भरना है। कीचड़ फेंकना, वस्त्र फाड़ना, मद्य एवं भाँग का सेवन करना तो असभ्यता के स्पष्ट लक्षण हैं। इस महत्त्वपूर्ण उत्सव को इसके वास्तविक अर्थ में ही देखना एवं मनाना श्रेयस्कर है। विकृतियों से बचना एवं इनका निराकरण करना भी भद्रपुरुषों एवं विद्वानों का आवश्यक कर्त्तव्य है।

होली क्यों मनायें? भारत एक कृषि-प्रधान देश है, इसलिए आषाढ़ी की नई फसल के आगमन पर मुदित मन एवं उल्लास से उत्सव मनाना उचित है। अन्य देशों में

भी महत्त्वपूर्ण फसलों के आगमन पर उत्सव का समान औचित्य है। नव वर्ष के आगमन पर एक पखवाड़े पूर्व से ही बधाई एवं शुभकामनाओं का आदान-प्रदान करना स्वस्थ मानसिकता एवं सामाजिक समरसता के लिए हितकारी है। साथ-साथ रहने पर मनोमालिन्य होना सम्भव है, जिसे मिटाने के लिए वर्ष में एक बार क्षमा याचना एवं प्रेम-निवेदन करना स्वस्थ सामाजिकता का साधन है। नई ऋतु के आगमन पर रोगों से बचने के लिए बृहद् होम करना वैज्ञानिक आवश्यकता है, इसलिए इस उत्सव को अवश्य एवं सोत्साह मनाना चाहिए।

होली कैसे मनायें? होली भी दीपावली की भाँति नई फसल एवं नई ऋतु का उत्सव है, अत: इसे भी स्वच्छता एवं सौम्यतापूर्वक मनाना चाहिए। फाल्गुन सुदी चतुर्दशी तक सुविधानुसार घर की सफाई-पुताई कर लें। फाल्गुन पूर्णिमा को प्रात:काल बृहद् यज्ञ करें। रात्रि को होली न जलायें। अपराह्न में प्रीति-सम्मेलन करें। घर-घर जाकर मनोमालिन्य दूर करें। संगीत -कला के आयोजन भी करें। रंग, गुलाल, कीचड़, स्वाँग, भाँग आदि का प्रयोग न करें। इनकी कुप्रथा प्रचलित हो गई है, जिसे दूर करना आवश्यक है। स्वस्थ विधिपूर्वक उत्सव मनाने पर मानसिकता, सामाजिकता एवं वैदिक परम्परा स्वस्थ रहती है। ऐसा ही करना एवं कराना सभ्य, शिष्ट एवं श्रेष्ठ व्यक्तियों का कर्त्तव्य है।

-आर्य समाज, शृंगार नगर, लखनऊ-२२६००५

पं. नरेन्द्र जी (हैदराबाद)

- रामनिवास गुणग्राहक

नर-नाहर नरेन्द्र का जीवन आर्यो, भूल न जाना।
प्राण-वीर अनुपम बलिदानी, वैदिक धर्म दिवाना।।

जब निजाम की दानवता ने मानवता को कुचला।
सबसे पहले आगे आया, वह साहस का पुतला।।
वाणी और लेखनी उसकी अंगारे बरसाती।
दूल्हा बना नरेन्द्र, साथ थे आर्य वीर बाराती।।
शुरू कर दिया उसने पाप-वृक्ष की जड़ें हिलाना-प्राणवीर.....

पहले फूँका शंख युद्ध का, पहले जेल गया था।
प्राणों का निर्मोही, प्राणों पर ही खेल गया था।।
जीवन के छह बरस जेल में अत्याचार सहे थे।
काला पानी तक भोगा, पर प्रण पर अटल रहे थे।।
लेखराम-श्रद्धानन्द से सीखा था धर्म निभाना- प्राणवीर.....

था 'वैदिक आदर्श' आपका पाञ्चजन्य उस रण का।
उसमें तव आदर्श गूँजता जीवन और मरण का।।
'मसावात' और 'झण्डा' में हुंकार तेरी सुनते थे।
आर्यवीर उत्साह उमंगों के सपने बुनते थे।।
अनुपम काम तेरा आर्यों में धर्म-आग सुलगाना-प्राणवीर.....

दलितोद्धार हेतु तू पहले-पहल जेल में धाया।
शासक और सजातीयों ने जी भर तुझे सताया।।
तेरे गर्जन-तर्जन में कोई अन्तर नहीं आया।
शायद तुझको कौशल्या कुन्ती ने दूध पिलाया।।
सब 'गुणग्राहक' आर्य सदा गायेंगे सुयश तराना- प्राणवीर.....

ज्योतिष - परिचय शिविर

आर्यजगत् के प्रसिद्ध ज्योतिष-विद्वान्, श्री मोहन कृति आर्ष पत्रक (पंचांग) के निर्देशक-रचयिता श्री दार्शनेय लोकेश जी, नोयडा ने ऋषि उद्यान, अजमेर में शुद्ध ज्योतिष-परिचय का प्रशिक्षण देने के लिए चार दिन का समय प्रदान किया है। वे २५ से २८ जून २०१६ तक प्रशिक्षण प्रदान करेंगे व ज्योतिष सम्बन्धी शंकाओं-समस्याओं का भी समाधान करेंगे। इसमें डेढ़-डेढ़ घण्टे की दो कक्षाएँ प्रात: ९.३० से ११ व दोपहर २ से ३.३० तक होगी। प्रात:-सायं यज्ञ-प्रवचन यथावत् चलते रहेंगे।

इस शिविर में भाग लेने के इच्छुक प्रबुद्ध आर्यजन व ज्योतिष में रुचि रखने वाले महानुभव सम्पर्क कर सकते हैं। सूचना व स्वीकृति प्राप्त सज्जन ही इसमें भाग ले सकेंगे। संख्या सीमित रखी गई है। **सम्पर्क- आचार्य सत्यजित्, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर (राज.) दूरभाष- ०९४१४००६९६१ (रात्रि- ८.३० से ९.३०)**

पुस्तक - परिचय

पुस्तक का नाम- व्याख्यान शतक
लेखक- स्वामी देवव्रत सरस्वती
प्रकाशक- आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, १५, हनुमान रोड़, नई दिल्ली-१
पृष्ठ- ५५८ **मूल्य**- ३५० रु. मात्र

मानव का ज्ञानवर्धन देखकर, सुनकर और पढ़कर होता है। जो व्यक्ति जितना वैदिक विचार धारा को सुनता और पढ़ता है उसका ज्ञान अधिक परिमार्जित होता है। ऐसा परिमार्जित ज्ञान वाला यदि उपदेशक बन जाता है, तो वह समाज का अधिक भला करता है। आज वर्तमान में हजारों उपदेशक हैं, उन उपदेशकों में से वैदिक ज्ञान परम्परा वालों को छोड़कर जितने उपदेशक हैं, वे समाज के अविद्या अन्धकार दूर करने की अपेक्षा बढ़ा रहे हैं। हजारों की संख्या में कथाकार कथाएँ कर रहे हैं, इन कथाकारों का सिद्धान्त निष्ठ न होने से समाज में अन्धविश्वास और पाखण्ड बढ़ रहा है। हाँ, जो वैदिक सिद्धान्त को ठीक से जानते हैं, वे समाज की अविद्या पाखण्ड को दूर कर पुण्य के भागी बन रहे हैं।

समाज में यदि उपदेशक ठीक है और उपदेश सुनने वाले ठीक हैं तो समाज की व्यवस्था भी ठीक होती है और यदि उपदेशक ठीक नहीं व उपदेश सुनने वाले ठीक नहीं तो सामाजिक व्यवस्था भी बिगड़ जाती है।

आजकल का उपदेशक वर्ग प्राय: स्वाध्याय कम करता है, कर रहा है। वह किसी अन्य उपदेशक द्वारा सुनी हुई बात को इधर से उधर करता है या वही अपनी पुरानी बातें दोहरा देता है, जिससे उसके उपदेशों में रोचकता का अभाव होता जाता है। हाँ, जो उपदेशक निरन्तर स्वाध्यायशील रहते हैं, उनके उपदेश भी नवीन व रोचक होते हैं।

जो उपदेशक विभिन्न प्रकार के व्याख्यान देने में निपुण होते हैं, वे अधिक लोकप्रिय होते हैं। विभिन्न विषयों पर उपदेशक व्याख्यान दे सके, उनकी सरलता के लिए आर्य जगत् के मूर्धन्य संन्यासी, शस्त्र व शास्त्र के ज्ञाता, विद्या के धनी स्वामी देवव्रत जी ने ''व्याख्यान शतक'' नामक पुस्तक लिखी है। इस पुस्तक में वेद, योग, धर्म, सिद्धान्त, आर्यसमाज, आर्यवीर, युवक, महापुरुष आदि विषयों पर एक सौ एक व्याख्यान लिपिबद्ध किये हैं। वेद विषय पर १५, योग विषय पर १५, धर्म विषय पर १२, सिद्धान्त विषय पर ११, आर्यसमाज विषय पर १७, आर्यवीर विषय पर ७, युवक विषय पर ११, महापुरुष विषय पर ५ और विविध विषयों पर ८ व्याख्यान लिखे हैं। प्रत्येक व्याख्यान प्रमाणों, युक्ति तर्कों से युक्त अपने आपमें पूर्णता लिए हुए हैं। व्याख्यानों में वेद, ब्राह्मण ग्रन्थ, उपनिषद्, गीता, महाभारत, बाल्मीकि रामायण, रामचरितमानस, मनुस्मृति, याज्ञवल्क्यस्मृति, कौटिल्य अर्थशास्त्र, चरक संहिता, सुश्रुत संहिता, योगदर्शन, सांख्य दर्शन, सत्यार्थ प्रकाश, नीतिशतक, योगवाशिष्ठ, विदुर नीति, हठयोग प्रदीपिका, धेरण्ड संहिता, गोरक्ष संहिता, चाणक्य नीति, नारद भक्ति सूत्र व हरिहर चतुंग आदि ग्रन्थों के प्रमाण दिये गये हैं। यदि उपदेशक वर्ग इस पुस्तक के व्याख्यानों को पढ़कर व्याख्यान देगा तो उसका व्याख्यान विद्वत्तापूर्ण तो होगा ही, साथ में लोगों का ज्ञानवर्धन करने वाला व रोचकता युक्त भी होगा।

पुस्तक में विद्वान् लेखक ने अपने मनोभाव प्रकट किये हैं-''अज्ञान मानव का सबसे बड़ा शत्रु है। ज्ञान के अभाव में मनुष्य कर्त्तव्याकर्त्तव्य का निर्णय नहीं कर पाता, जिसके कारण ''अन्धेनैव नीयमाना यथान्धा:'' जैसे एक अन्धे के पीछे जाने वाले दूसरे अन्धे व्यक्तियों की गड्ढे में गिरने की पूरी सम्भावना रहती है, वैसी ही अवस्था अविद्याग्रस्त लोगों की होती है। अविद्या की पृष्ठभूमि में ही अस्मिता, राग, द्वेष, अभिनिवेश के बीज पनपते हैं। सीधे, भोले और अज्ञानी लोगों को कोई भी अपने वाग्जाल में फँसाकर दिग्भ्रमित बहुत सरलता से कर सकता है, इसलिए विद्याध्ययन की समाप्ति पर समावर्तन संस्कार के समय आचार्य स्नातकों को प्रेरणा देते हुए कहता था, ''स्वाध्याय प्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्'' स्वाध्याय और प्रवचन में कभी प्रमाद नहीं करना। स्वाध्याय और प्रवचन सबसे बड़ा तप है, जो प्रतिदिन एक वेदमन्त्र या उसका आधा अथवा चतुर्थ भाग का स्वाध्याय करता है, मानो उसने नख से शिख तक तप कर लिया।''

इस ''व्याख्यान शतक'' पुस्तक लिखने की प्रेरणा के विषय में लेखक लिखते हैं-''व्याख्यान शतक'' लिखने की प्रेरणा आर्यसमाज की दो विभूतियों से मिली। पं. लेखराम जी की अन्तिम इच्छा थी कि आर्यसमाज से तकरीर (व्याख्यान) और तहरीर (लेखन) कभी बंद नहीं होने चाहिए। एक दिन शास्त्रार्थ महारथी पं. गणपति शर्मा चूरु (राजस्थान) का लेख किसी आर्यसमाज के पुस्तकालय

में देखने को मिला। आदरणीय पण्डित जी ने उस जैसे एक सौ लेखों की व्याख्यान शतक पुस्तक लिखने की इच्छा प्रकट की थी। इन दोनों दिग्गज पण्डितों ने पौराणिकों व अन्य मतानुयायियों के साथ शास्त्रार्थ कर आर्य समाज की विजय दुन्दुभी बजाई थी।.....मैं श्रद्धा से उनको नमन करता हूँ।

विशेष महापुरुषों से प्रेरित होकर लिखी गई यह पुस्तक आर्य जगत् के उपदेशक वर्ग व अन्यों के लिए महत्त्वपूर्ण है। गुरुकुलों के छात्र यदि इन व्याख्यानों को पढ़ समझकर व्याख्यान देने का अभ्यास करेंगे तो वे आगे चलकर उच्चकोटि के वक्ता बन जायेंगे।

दृढ़ जिल्द, सुन्दर आवरण, कागज व छपाई से युक्त यह पुस्तक स्वाध्याय प्रेमी व उपदेशक वर्ग को हर्ष देने वाली होगी। स्वाध्यायशील व वक्ता लोग इस पुस्तक को प्राप्त कर लेखक व प्रकाशक के श्रम को सफल करेंगे, इस आशा के साथ -**आचार्य सोमदेव ऋषि उद्यान, अजमेर**

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उन पर '**मन्त्री परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया, राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावर हाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।
IFSC - IBKL0000091

२. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - 10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।
IFSC - SBIN0007959

परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित आगामी कार्यक्रम

१. १५ से २२ मई, २०१६ **आर्यवीर शिविर,** सम्पर्क- ०९४६००१६५९०

२. ३० मई से ५ जून, २०१६ **आर्य वीराङ्गना शिविर,** सम्पर्क- ०९४६००१६५९०

३. १२ से १९ जून, २०१६- **योग-साधना शिविर,** सम्पर्क- ०१४५-२४६०१६४

जब तक मनुष्य सुख-दुःख, हानि और लाभ की व्यवस्था में परस्पर अपने आत्मा के तुल्य दूसरे को न जानते तब तक पूर्ण सुख को प्राप्त नहीं होते, इस से मनुष्य लोग श्रेष्ठ व्यवहार ही किया करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.४०

मनुष्यों को चाहिये कि सदा यज्ञ का आरम्भ और समाप्ति को करें और संसार के जीव को अत्यन्त सुख पहुँचावें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६२

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एक मात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रातः एवं सायं दैनिक यज्ञ– प्रवचन, वेद–पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***– आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति निःशुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***– अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्ण रूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था निःशुल्क की जाती है। ***गोशाला***– गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का निःशुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***– वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा निःशुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***– इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोध कर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ निःशुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***– योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में निःशुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों से भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युत पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाके फोड़कर जलाते हैं असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी–छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थिति होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अतः आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

अतिथि यज्ञ के होता
(१ से १५ अप्रैल २०१६ तक)

१. श्री देवमुनि, अजमेर २. श्री किशोर काबरा, अजमेर ३. श्री रमेश मुनि, अजमेर ४. श्री माँगीलाल गोयल, अजमेर ५. स्वस्तिकामः चैरिटेबल ट्रस्ट, अमरावती, महा. ६. श्री अवनीश कपूर, दिल्ली ७. केवलराम एण्ड कम्पनी, जैसलमेर, राज. ८. श्री महेश गन्नौर, सोनीपत, हरि.। **– परोपकारिणी सभा, अजमेर।**

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला में उत्पादित गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों में निःशुल्क किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौवों को उत्तम चारा मिले, इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चैक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएँगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता
(१ से १५ अप्रैल २०१६ तक)

१. श्रीमती उर्मिला उपाध्याय, अजमेर २. श्रीमती गीता देवी चौहान, अजमेर ३. श्री राजेश कुमार त्यागी, अजमेर ४. श्रीमती तारावन्ती कोहली, दिल्ली ५. श्रीमती नसीम रावत, गाजियाबाद, उ.प्र.। **– परोपकारिणी सभा, अजमेर।**

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित
जमानी आश्रम गुरुकुल, इटारसी, होशंगाबाद
(१अप्रैल २०१५-३१ मार्च २०१६ तक)
अतिथि यज्ञ के होता

१. श्री बालचन्द तुलसी, पूना, महाराष्ट्र २. श्री रणजित् कुमार आर्य, गया, बिहार ३. श्री रेवाशंकर सोनी, खण्डवा, म.प्र. ४. श्री आनन्द पटेल, जमानी ५. माता जी, जमानी ६. श्रीमती कौशल्या, अजमेर ७. श्री आशुतोष आर्य ८. श्री रवि कुमार, पुणे, महाराष्ट्र ९. श्री अरूण नायक, सुन्दरगढ़, ओडिशा १०. श्री धर्मेन्द्र, होशंगाबाद, म.प्र. ११. श्री रेवाशंकर सोनी, खण्डवा, म.प्र. १२. श्रीमती प्रतिभा आर्या, गया, बिहार १३. श्री गिरिराज सोनी।

गौशाला के दानदाता

१.श्रीमती प्रतिभा आर्या, गयाजी, बिहार २. श्री रवि वर्मा, जमानी ३. श्री राजीव सोनी, बैतुल, म.प्र. ४. श्री दिनेश सोनी, बैतुल, म.प्र. ५. रविन्द्र पारे, भोपाल, म.प्र. ६. श्री रवि आर्य, पुणे, महाराष्ट्र ७. श्री चौथू सिंह राठौर, जयपुर, राज. ८. श्री राजेन्द्र सिंह, हिसार, हरियाणा, ९. श्री पुरुषोत्तम ठकरे, नागपुर, म.प्र. १०. श्रीमती बसुमति, जमानी, म.प्र. ११. मै. भारत भवानी इलेक्ट्रीक्लस, इटारसी, म.प्र. १२. श्रीमती सीताबाई चौहान, होशंगाबाद, म.प्र. १३. श्री नर्बदाशंकर व्यास, होशंगाबाद १४. श्रीमती गुलाब महतो, इटारसी १५. श्री रामकिशोर घाटली, इटारसी १६. श्री दिनेश चन्द्रवंशी, बैतूल १७. श्री सुरेश उपाध्याय, पथरिया १८. श्री अशोक चिमानिया, जमानी १९. श्रीपरमानन्द आर्य, भोपाल, म.प्र. २०. आर्य समाज, छिन्दवाड़ा २१. श्री सज्जन शुक्ला, छिन्दवाड़ा २२. श्री आशीष साहू, छिन्दवाड़ा २३. श्री रवि वर्मा, बैतूल, म.प्र. २४. श्री सुनील बघेल, बैतुल, म.प्र. २५. श्रीमती सुजीश आर्या, छिन्दवाड़ा २६. श्री दौलत यादव, छिन्दवाड़ा २७. श्री कमलेश जोशी, हरदा, म.प्र. २८. श्री बसन्त, छिन्दवाड़ा, म.प्र. २९. श्री राधेश्याम बन्देवार, छिन्दवाड़ा ३०.श्री रामभरोसे उमरिया, छिन्दवाड़ा ३१. श्री शालिकराम चौधरी, जमानी ३२. श्री शरद कुमार रावत, इटारसी ३३. डॉ. सिद्धसेन शास्त्री, भोपाल, म.प्र. ३४. श्री आर्य नरेन्द्रसिंह डोलरिया ३५. श्री शानुप्रश्न्ना, जमानी ३६. श्रीमती सरला बाई ३७.श्रीमती ममता डोगरे, खण्डवा ३८. श्री रवि, पूना ३९. श्री आशीष डोगरे, खण्डवा ४०. श्रीमती भावना गीते, भोपाल ४१. श्रीमती सोनाली पारे, भोपाल, म.प्र. ४२. श्री आशीष रजक, जबलपुर ४३.श्री कमलेश गौर, इटारसी ४४. श्री ज्योतिप्रकाशरथ, जबलपुर, म.प्र. ४५. श्री नर्मदाशंकर व्यास, होशंगाबाद, म.प्र.।

ऋषि मेला २०१५ दानदाता सूची

५०१. श्रीमती कौशल्या देवी/श्री ओमप्रकाश, जयपुर, राज. ५०२. श्रीमती सुमित्रा आर्या, जयपुर,राज. ५०३. आर्यसमाज, जयपुर, राज. ५०४. आर्यसमाज भावा, राजसमंद, राज. ५०५. श्री अशोकचन्द्र श्रुतिमल राठी, ईचलकरना, महाराष्ट्र ५०६. श्री गणपतलाल तापड़िया, कोटा ५०७. श्री ओमप्रकाश कच्छावा, ५०८. श्री शंकरलाल आर्य, जोधपुर, राज. ५०९. डॉ. घनश्याम दास गांधी, झाँसी, उ.प्र. ५१०. श्री रामस्वरूप मुंजाल, सोनीपत, हरियाणा ५११. हँसराज आर्य समाज, दिल्ली ५१२. श्री चन्द्रप्रकाश आर्य समाज, दिल्ली ५१३. श्री तेजुमल, अरवानी, सरवाड़, राज. ५१४. श्री हरगोपाल, जयपुर, राज. ५१५. श्री प्रेम पिपलिया ५१६. श्री मंगाराम/श्री प्रभु घासी, पाली, राज. ५१७. श्री माँगीलाल आर्य, पाली, राज. ५१८. आर्यसमाज जावड़ा ५१९. सुश्री सुकामा आर्या, अजमेर ५२०. श्री नारायण भाई, ५२१. श्री स्वप्नविश्वास, राजसमंद, राज. ५२२. श्रीमती निर्मला विज ५२३. श्री आर्यसमाज सुवासा, उज्जैन, म.प्र. ५२४. श्री अशोक आर्य, पुष्कर, राज. ५२५. श्री गोपाल, जयपुर, राज. ५२६. श्री सतीशचन्द्र मित्तल, जयपुर, राज. ५२७. श्री नारायण सिंह, जयपुर, राज. ५२८. श्री सोममुनि आर्य समाज, गंगापुरसिटी, राज. ५२९. श्री देवेन्द्रानन्द आर्य, बीदर ५३०. श्री नवनीत राय, सोजतसिटी, राज. ५३१. श्री विश्वभानु सोनी, जयपुर,राज. ५३२. श्री सुधीर, जयपुर, राज. ५३३. श्री कपूरचन्द/श्री मुंशीराम, कैथल, हरियाणा ५३४. स्वामी सुधानन्द, सरस्वती, ओडीशा ५३५. श्री विवेक, रोहतक, हरियाणा ५३६. श्री राजेश मोर, रोहतक, हरियाणा ५३७. श्री तेज सिंह, अजमेर ५३८. श्री मूलचन्द हरदित, तोषनीवाल, कोटा, राज. ५३९.आर्यसमाज कोटपूतली, राज. ५४०. आर्यसमाज छोटी सादड़ी, राज. ५४१. श्री हीरालाल शर्मा, उदयपुर, राज. ५४२. श्री रामजीराम आर्य, डेगाना, राज. ५४३.श्री गोविन्दराम हासानन्द, नई दिल्ली ५४४. श्री अशोक कुमार गोगलानी, गाजियाबाद, उ.प्र. ५५५. श्री मुरलीधर/श्री बालमुकन्द छापेरवाल, राजगढ़, राज. ५५६. श्री प्रेमचन्दआर्य, पंचकुला, हरियाणा ५५७. श्री नोपाराम वर्मा, श्री गंगानगर, राज. ५५८. श्री राजेश कुमावत, जयपुर ५५९. मै. सोना टेक्सटाइल, प्रा. लि. भीलवाड़ा, राज. ५६०. श्री हरिप्रसाद बेदी, चुरु, राज. ५६१. आर्यसमाज सरदारशहर, राज. ५६२. श्री आनन्दीलाल, पाली, राज. ५६३. श्री बलवन्त सिंह, हरदोई, उ.प्र. ५६४. श्रीमती पदमावती आर्या, अगरा, उ.प्र. ५६५. श्री गोपालराम वर्मा, हनुमानगढ़, राज. ५६६. श्रीमती किरण देवी ५६७. श्री लेखराम शर्मा ५६८. श्री हरदेव सिंह ५६९. डॉ. मोक्षराज, अजमेर ५७०. श्री बलजीत सिंह, हरियाणा ५७१. श्री श्यामलाल, अहमदाबाद, गुजरात ५७२ श्री ओसवरात मोहिल ५७३. श्री महेश गबनिया, इटारसी,उ.प्र. ५७४. श्रीमती भारती खरे, लातुर, महाराष्ट्र ५७५. श्री जगदीश प्रसाद तापड़िया, कुचामन सिटी, राज. ५७६. श्री मुरलीधर वर्मा ५७७. महेन्द्र सिंह ५७८. श्री माँगीराम, नईदिल्ली ५७९. श्री रूपचन्द सोनी, विजयनगर, राज. ५८०. श्री जितेन्द्र कुमार, मुजफ्फरनगर, उ.प्र. ५८१. श्री लोकेश तँवर ५८२. आर्यसमाज, सुरेन्द्रनगर, गुजरात ५८३. आर्यसमाज, भरतपुर,राज. ५८४. आर्येन्द्र आर्य ५८५. श्री धनजी भाई/चुन्नीलाल हालानी, बनासकाँठा, गुजरात ५८६. श्री ठक्कर प्रभुराम लोवजीभाई, बनासकाँठा, गुजरात ५८७. श्री अकाड़, सरवाड़, राज. ५८८. श्री रामगोपाल आर्य ५८९. श्री रामदेव आर्य, बहादुरगढ़,हरियाणा ५९०. श्री जयसिंह आर्य, बहादुरगढ़, हरियाणा ५९१. श्री सतपाल सिंह आर्य, पंचकुला, हरियाणा ५९२. श्री जगदीश प्रसाद हरीत, नीमच, म.प्र. ५९३. श्री नवाब सिंह, चोकड़ा ५९४. श्री वासुदेव/श्रीमगन लाल, ठाका, गुजरात ५९५. श्री सुमेर सिंह राठौड़, जोधपुर, राज. ५९६. श्री अमित खन्ना, दिल्ली ५९७. श्री ईश देवान, गुडगांव, हरियाणा ५९८. श्री निर्मल दीवान, गुडगांव, हरियाणा ५९९. महिला आर्यसमाज, पानीपत, हरियाणा ६००. आर्यसमाज, कोटा, राज.

जैसे वेद के वेत्ता विद्वान् लोग वेदानुकूल मार्ग से परमेश्वर को जानकर उत्तम ज्ञान से उसका सेवन करते हैं वैसे ही जगदीश्वर सब को उपासनीय अर्थात् सेवन करने के योग्य है, वैसे ज्ञान के विना ईश्वर की उपासना कभी नहीं हो सकती क्योंकि विज्ञान ही उसकी अवधि है।

–महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४

जिज्ञासा समाधान - ११०

- आचार्य सोमदेव

आदरणीय सम्पादक जी, सादर नमस्ते!

मन में बार-बार एक प्रश्न आता है कि क्या हम वेद मन्त्रों के अलावा श्लोक, सूत्र आदि से भी आहुति दे सकते हैं? यदि नहीं तो स्वामी जी ने गृहसूत्रों से भी आहुतियाँ दिलायी हैं, जैसे-अयं त इध्म (आश्व.गृ.) अग्नये स्वाहा, सोमाय स्वाहा (गो.गृ.) भूर्भुवः स्वरग्नि.. (तैत्तिरीय आ.) आपोज्योतिः...(तैत्तिरीय आ.) यदस्य कर्मणो...(आश्व.गृ.) ये तो शतं वरुण.. (कात्या.श्रो.) अयाश्चाग्ने....(कात्या.श्रो.)। तो क्या इसी प्रकार अन्य गृह सूत्रों के मन्त्रों से भी आहुतियाँ दे सकते हैं? जैसे वैदिक छन्दों को मन्त्र कहा जाता है, वैसे ही गृह सूत्रों स्मृतियों के श्लोकादि को भी मन्त्र कहा जा सकता है। यदि मन्त्र नाम विचार का है तो श्लोकादि में भी विचार हैं। **- विश्वेन्द्रार्य**

समाधानः- यज्ञकर्म कर्मकाण्ड है। इस कर्मकाण्ड को ऋषियों ने धर्म के साथ जोड़ दिया है और इसको मनुष्य के कर्त्तव्य कर्मों में अनिवार्य कर दिया। वैदिक युग अर्थात् आज के मत-मतान्तरों से पूर्व के काल में यह कर्म ऋषियों की विशुद्ध परिपाटी से होता था। प्रायः प्रत्येक गृहस्थ पञ्च यज्ञों का अनुष्ठान किया करता था। महाभारत के बाद ऋषि-महर्षियों के अभाव में ब्राह्मण वर्ग ने अपनी मनमर्जी चलाकर कर्मकाण्ड का रूप ही बदल डाला। जो कर्मकाण्ड पवित्र था, जिसके प्रति श्रद्धा थी, उस कर्मकाण्ड को तथाकथित पण्डितों ने अपवित्र कर दिया, अर्थात् ऐसे कर्म उसके साथ युक्त कर दिये जो मनुष्य के लिए निन्दित थे। इसी कारण जिस कर्म के प्रति श्रद्धा थी, उसके प्रति अश्रद्धा व घृणा पैदा हो गई। परिणाम यह हुआ कि इस पवित्र यज्ञ कर्म से विमुख हो अनेक मत-सम्प्रदाय बनते चले गये और देश समाज का पतन होता चला गया। मनुष्य के नैतिक मूल्य गिर गये, मनुष्य या तो धर्म-कर्म से इतना स्वच्छन्द हुआ कि अपनी मर्यादा को तोड़ बैठा अथवा धर्म-कर्म में इतना बँध गया कि कोई भी कार्य पण्डित से पूछे बिना कर नहीं सकता। वेद, शास्त्र की बात गौण हो गई, तथाकथित पण्डित की बात सर्वोपरि होती चली गई। ऐसा होने से या तो लोग नास्तिक होते चले गये या फिर धर्मभीरु होते गये।

इस नास्तिकता ने और धर्मभीरुता ने मनुष्य समाज को पतन की ओर उन्मुख कर दिया। परमेश्वर की दया हम लोगों पर हुई कि महर्षि दयानन्द का इन सब बातों पर ध्यान गया और इस दूषित वातावरण को उन्होंने दूर किया। महर्षि ने अपने जीवन में ईश्वर और वेद को सर्वोपरि आदर्श माना है। वेद के आधार पर जो भी सुधार हो सकता था, वह महर्षि ने किया और अपने जीवन काल में सुधार करते रहे।

यज्ञ को महर्षि ने जगत् के उपकार के लिए महान् कर्म माना है। यज्ञ कर्म हम ठीक से करें-इसके लिए महर्षि दयानन्द ने पंचमहायज्ञविधि व संस्कार विधि नामक दो पुस्तकें लिखी हैं। इनमें भी संस्कार विधि पुस्तक बाद की है। इसमें महर्षि ने यज्ञ की ठीक-ठीक विधि को दे दिया है। आपने पूछा है कि वेद के मन्त्र के अतिरिक्त किसी श्लोक-सूत्र आदि की आहुति भी दे सकते हैं? इसमें हमारा कहना है कि यदि किसी श्लोक, सूत्र का विनियोग महर्षि अथवा किसी प्रामाणिक विद्वान् ने कर रखा है तो दे सकते हैं, अपनी मनमर्जी से नहीं देना चाहिए। यदि ऐसे ही अपनी मनमर्जी से देने लग गये तो पूर्व की भाँति अर्थात् महाभारत के बाद और महर्षि दयानन्द से पहले जो कर्मकाण्ड का विकृत रूप था, वह होता चला जायेगा, इसलिए जिनका विनियोग महर्षि दयानन्द ने किया है, उन मन्त्र-सूत्रों से आहुति देते रहें। इसमें महर्षि का भी मत है कि जो और अधिक आहुति देना हो तो - **विश्वानि देव सवितर्दुरितानि.....**इस मन्त्र और पूर्वोक्त गायत्री मन्त्र से आहुति देवें। स.प्र.३

''अधिक होम करने की जहाँ तक इच्छा हो, वहाँ तक स्वाहा अन्त में पढ़कर गायत्री मन्त्र से होम करें।'' पञ्च महायज्ञविधि। यह विधान महर्षि दयानन्द ने किया है।

आपने कहा कि महर्षि ने गृह सूत्रों आदि से आहुति

का विधान किया है, इसमें हमारा कथन है कि वह आर्ष=ऋषिकृत विधि होने से ठीक है। जहाँ जिस प्रसंग के मन्त्र-सूत्रों का विनियोग जिस संस्कार आदि में आवश्यक था, महर्षि ने वह किया है। उनका वह विनियोग उचित है। महर्षि के इस विनियोग को देखकर भी जो कोई किसी अन्य सूत्र, श्लोक से आहुति दिलावे वा देवे सो ठीक नहीं। ऐसी मनमर्जी करने से यज्ञ का विशुद्ध स्वरूप ही बिगड़ जायेगा। मन्त्र मुख्य रूप से मूल वेद संहिताओं का नाम है, वेद में आये कथन को मन्त्र कहते हैं। इसमें यह रूढ़-सा हो गया है। ऐसा होने पर भी ऋषियों के व्यवहार से ज्ञात हो रहा है कि वेद से इतर शास्त्र वचनों को भी मन्त्र नाम से कहा है। जैसे कि आपने भी ''अयं त इध्म.....'' को उद्धृत किया है।

महर्षि ने मन्त्र विचार को कहा है, सो ठीक है। मन्त्र शब्द मन्त्र गुप्त परिभाषणे धातु से सम्पन्न है, जिसका अर्थ ही गुप्त कथन = रहस्य रूप कथन है। इस मन्त्र शब्द से मन्त्री शब्द बना है, मन्त्री अर्थात् मन्त्रणा करने वाला, विचार करने वाला, राजा को विशेष विचार देने वाला अथवा राजा से विशेष मन्त्रणा करने वाला।

मन्त्र नाम विचार का है, इस हेतु को लेकर हम किसी भी श्लोक सूत्र को बोलकर आहुति देने लग जायें सो ठीक नहीं है, क्योंकि विचार केवल सूत्र श्लोक ही नहीं है, विचार तो कुरान की आयतें भी हैं, बाइबल की आयतें भी हैं। उपन्यास और नावेल में लिखी हुई बातें भी विचार ही हैं। चलचित्रों में कहे गये संवाद विचार हैं, तो क्या इनको बोलकर भी यज्ञ में आहुति देने लग जायें? इसको आप भी स्वीकार नहीं करेंगे और न ही कोई अन्य यज्ञप्रेमी स्वीकार करेगा।

इसलिए श्लोक सूत्रादि विचार होते हुए भी हर किसी श्लोक सूत्रादि से आहुति इसलिए नहीं देनी चाहिए, क्योंकि ऋषियों अथवा अन्य प्रामाणिक विद्वानों द्वारा उनका विनियोग हमें प्राप्त नहीं है। हाँ, यदि ऋषियों या किसी प्रामाणिक विद्वान् ने किसी मन्त्र श्लोक सूत्र का यज्ञ में प्रसंग के अनुसार विनियोग कर रखा हो तो उससे आहुति दे सकते हैं, दी जा सकती है।

- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर।

गौ हत्या अभिशाप देश का

रचयिता राम आर्य ''व्यथित''

गौ की हत्या करने वाला मानवता का दुश्मन है।
सुख शांति का विध्वंसक है, हत्यारा पापी जन है।
कोई मत हो या मनुष्य हो या सरकार देश की हो।
कोई राज्य प्रजा कोई भी या सत्ता प्रदेश की हो।।
गौ वध को प्रोत्साहन देता और समर्थन करता जो।
गौ वध को करवाने वाला धूर्त देश का दुश्मन है।।१।।
इस मनुष्य का अंग न कोई काम किसी के आता है।
गौ माता का सारा जीवन परमारथ में जाता है।।
जीते जी वह दुग्ध पिलाती जो अमृत सम होता है।
मरणोपरांत चाम दे जाती मानव तन को अर्पण है।।२।।
उसका दूध एक औषध है हर आयु का पोषक है।
मेधा बुद्धि प्रदाता है शक्ति पाता आराधक है।।
गौ हत्या अभिशाप देश का उन्नति में अवरोधक है।
गौ न केवल पशु साधारण धरती का अमूल्य धन है।।
गो मूत्र अनेकों रोगों में उपयोगी होता है।
बूढ़े बच्चे जीवन पाते मनुज निरोगी होता है।।
उसका गोबर मूत्र खेत फसलों को जीवन देता है।
रोगरहित अन्न उपजाता कृषक जगत का जीवन है।।
गोबर और गौमूत्र पूर्णत: कृमिनाशक होता है।
मिट्टी की उर्वरा शक्ति में परम सहायक होता है।
आज चले जो खाद रसायन मिट्टी को विष देते हैं।
अन्न विषैला बनता जाता धीमा विष है, यह धुन है।।
उसका दूध, दही, घी बनकर परम पोष्टिक होता है।
उसका ही यह पंचगव्य जीवन उपयोगी होता है
उसका गोबर मूत्र न दूषित घर को शोधक होता है।
रोगों का क्षय होता है, धरती को पूर्ण समर्पण है।।
किन्तु आज बूचड़खानों का जाल देश में फैला है।
गौ मांस निर्यात कराते यह तो धंधा मैला है।।
गौ धन की बर्बादी यह षडयंत्र घिनौनी हरकत है।
जिससे मिले बर्बादी मुद्रा यह दुष्कृत्य पापी धन है।।
अपनी जननी पहली माता दूजी धरती माता है।
और तीसरी इस धरती की केवल यह गौ माता है।।
इसकी रक्षा करनी होगी देश धर्म का नाता है।
भारत माता तुम्हें पुकारे यह मेरा आवाहन है।।

- १८६, आर्य निकुंज, शिक्षक कॉलोनी, विदिशा, म.प्र.।
८९६२११८९०८

संस्था - समाचार

०१ से १५ अप्रैल २०१६

यज्ञ एवं प्रवचन- जैसा कि विदित है, ऋषि उद्यान आर्य जगत् के उन स्थलों में से है, जहाँ पूरे वर्ष प्रतिदिन दोनों समय यज्ञ का अनुष्ठान अपरिहार्य रूप से किया जाता है। प्रात:काल यज्ञोपरान्त वेद के कुछ मन्त्रों का पाठ तथा महर्षि दयानन्द कृत वेदभाष्य का स्वाध्याय किया जाता है और तदनन्तर वेद प्रवचन होता है। रविवार प्रात:काल विशेष यज्ञ किया जाता है, जिसमें नगर निवासी आर्य सज्जन, माताएँ, बहनें और बच्चे सम्मिलित होते हैं और अपनी-अपनी आहुतियाँ प्रदान करते हैं। सायंकाल प्रतिदिन यज्ञ और महर्षि दयानन्द जी द्वारा पूना में दिये गये प्रवचन 'उपदेश मञ्जरी' का पाठ एवं व्याख्यान होता है। प्रत्येक रविवार को सायंकाल गुरुकुल के ब्रह्मचारियों का भजन, प्रवचन होता है। यहाँ पर व्याकरण, दर्शन, रचना-अनुवाद कौमुदी की कक्षायें निरन्तर चलती रहती हैं, जिसमें गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के साथ-साथ आश्रमवासी संन्यासी, वानप्रस्थी, महिलायें और बाहर से आने वाले जिज्ञासु ज्ञान अर्जित करते रहते हैं। प्रतिदिन प्रात:काल सरस्वती भवन प्रांगण में आसन-प्राणायाम आदि क्रियाएँ करायी जाती हैं।

प्रात:कालीन सत्संग में ऋग्वेद के चौथे मण्डल के दूसरे सूक्त के सत्रहवें मंत्र की व्याख्या करते हुए **आचार्य श्री सत्यजित् जी** ने कहा कि राजा और प्रजाजन आदि सभी मनुष्यों को चक्रवर्ती राज्य के आनन्द प्राप्ति के लिये विद्या और धर्म युक्त कर्म ही करना चाहिये। वैदिक धर्म का विद्या से घनिष्ठ सम्बन्ध है क्योंकि विद्या ग्रहण के बिना धर्म-अधर्म को पूर्ण रूप से जानना, समझना संभव नहीं है। विद्या और बिजली से भौतिक तथा आध्यात्मिक उन्नति होती है। सभा में एक-दूसरे से यथार्थ संवाद करने के लिए भी विद्या अत्यन्त आवश्यक है। विद्या ही हमें मनुष्य बनाती है। कोई किसी भी वर्ण का हो-ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र सभी को अपनी-अपनी योग्यता, बल, धन, कार्यकुशलता और आचरण की पवित्रता के लिये विद्या की वृद्धि करना आवश्यक है। ब्रह्मचर्य आश्रम केवल विद्या पढ़ने के लिये है किन्तु गृहस्थी, वानप्रस्थी और संन्यासी को भी विद्या की निरन्तर वृद्धि करनी चाहिये। राज सभा, विद्या सभा और धर्म सभा में विद्वानों की ही आवश्यकता होती है जिससे अन्य साधारण मनुष्यों को उचित दिशा-निर्देश प्राप्त होता रहे। व्यक्तिगत, सामाजिक, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय व्यवहार, व्यापार, व्यवसाय, उद्योग की उन्नति के लिये नित्य नये तकनीकी ज्ञान की आवश्यकता होती है। बिजली आदि समृद्धि के साधनों को विद्या से ही प्राप्त किया जा सकता है। इस बिजली आदि विद्या के पढ़ने-पढ़ाने और प्रयोग करने में जन्म से ही अपना पूरा जीवन लगाने वाले वैज्ञानिक, इंजीनियर अन्य मनुष्यों की अपेक्षा विशेष सुख प्राप्त करते हैं। जिन मनुष्यों का जन्म विद्वानों के परिवार में होता है तथा बचपन से विद्या ग्रहण में लगे रहते हैं वे आनन्द का भोग करते हैं। विद्याहीन मनुष्यों का जीवन पशुओं के समान आहार, निद्रा, भय आदि में व्यर्थ चला जाता है। विद्या के बिना प्रगति बाधित होती है।

मंगलवार ५ अप्रैल को **मारीशस निवासी** तीस व्यक्तियों का एक समूह (महिलाओं और बच्चों सहित) भारत में वैदिक धर्म से सम्बन्धित संस्थाओं का भ्रमण करते हुए ऋषि उद्यान आया। परोपकारिणी सभा के कोषाध्यक्ष माननीय **श्री सुभाष जी नवाल** तथा सभी आश्रम वासियों ने उन सबका स्वागत किया। 'अतिथि देवो भव' हमारे देश की प्राचीन परम्परा है। उन सभी आगन्तुकों ने सरस्वती भवन में स्वामी जी द्वारा उपयोग की गई वस्तुओं और चित्रदीर्घा का अवलोकन किया। गुरुकुल, यज्ञशाला, भोजनालय, अतिथि भवन और स्वागत-सत्कार की सुन्दर व्यवस्था देखकर वे सभी प्रसन्न हुए। रात्रिकालीन सत्र में **स्वामी आशुतोष जी** ने कहा कि संसार में हम सब यात्री है। अपने ज्ञान को निरन्तर बढ़ाते हुए मुक्ति प्राप्त करना ही हमारी यात्रा का उद्देश्य होना चाहिये। प्रात:कालीन प्रवचन के क्रम में वैदिक धर्म और योग सम्बन्धी शंकाओं का समाधान करते हुए **आचार्य श्री सत्यजित् जी** ने कहा कि जीवन के सर्वोच्च लक्ष्य ईश्वर की प्राप्ति के लिये ऋषियों ने हमें अष्टांग योग का मार्ग बताया है। अष्टांग योग के अलग-अलग आठ चरण मिलकर सम्पूर्ण योग को प्रस्तुत करते हैं। योग के नाम पर आज जो प्रक्रियाएँ प्रचलित हैं उनमें से अधिकांश अष्टांग योग के

एक, दो या तीन, चार अंशों को लेकर अपनी अनुकूलता से कुछ परिवर्तन करके लोगों को बताया जा रहा है। इसके लिये एक बिन्दु पर विचार कर सकते हैं कि योग की यह पद्धति किस उद्देश्य से बनाई गई है और संस्था का लक्ष्य क्या है? हमारे प्राचीन काल के ऋषियों ने वेद शास्त्रों का अध्ययन करके और जीवन के अनुभवों से यह निष्कर्ष निकाला कि संसार की सभी वस्तुओं को प्राप्त करके भी स्थायी सुख की इच्छा पूरी नहीं होती है, सम्पूर्ण दु:खों की निवृत्ति शरीर में रहते हुए नहीं हो सकती। योगाभ्यास में शरीर और इन्द्रियों को साधन के रूप में प्रयोग करके आत्मा और परमात्मा का चिन्तन करते हुए सब दु:खों से छूटकर आनन्द को प्राप्त करना मुख्य लक्ष्य होता है। जो सांसारिक सुख भोग की इच्छा वाले मनुष्य योग सीखते हैं वे यम नियमों के पालन में रुचि नहीं रखते। जिस व्यक्ति के जीवन का लक्ष्य मुक्ति नहीं है वह केवल शरीर और मन को स्वस्थ रखने के उद्देश्य से आसन और प्राणायाम आदि का अभ्यास करता है। मनुष्य जन्म को सफल बनाने के लिए अष्टांग योग की ऊँचाई और गहराई को समझना आवश्यक है। योग की विभिन्न पद्धतियों में वही पद्धति ठीक है जो हमें हमारे अन्तिम लक्ष्य 'मुक्ति' तक पहुँचा दे। वर्तमान परिस्थिति में योग की सही पद्धति को जानने के लिए वेद शास्त्रों का अध्ययन करना चाहिये तथा विद्वानों से शंका समाधान करना चाहिये। शुभकामनायें और धन्यवाद देते हुए आचार्य जी ने योगमार्ग में आगे बढ़ने तथा ऋषि उद्यान में पुन: आगमन के लिए प्रेरित किया।

प्रात: कालीन सत्संग में **माननीय श्री सत्येन्द्र सिंह आर्य जी** यजुर्वेद के इक्कीसवें अध्याय के मन्त्रों की व्याख्या करते हैं। समसामयिक राष्ट्र की ज्वलंत समस्या पर चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि वर्तमान में महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में पढ़ने वाले युवाओं को देशद्रोही राजनीतिक दलों द्वारा गलत राह में ले जाया जा रहा है। हम सबको राष्ट्र के बाहरी शत्रुओं और देशद्रोहियों से सावधान रहना चाहिये। देश में दलतंत्रीय शासन प्रणाली के कारण कुछ राजनैतिक दल विदेशी शत्रुओं से धन लेकर देश को तोड़ने का काम कर रहे हैं। चीन, पाकिस्तान, अमेरिका, इंग्लैण्ड आदि ईसाई एवं मुस्लिम कट्टरपंथी हमारे देश के देशद्रोहियों को एन.जी.ओ. के द्वारा प्रतिवर्ष करोड़ों रुपये से सहायता करके एवं पुरस्कार आदि देकर हर समय विद्रोह के लिये उकसाते रहते हैं। विश्व स्तर पर भारत को तोड़ने का षडयन्त्र चल रहा है। कश्मीर एवं देश के अन्य भागों में आतंकवादियों, नक्सलवादियों, माओवादियों, अलगाववादियों को अस्त्र-शस्त्र और धन से सहायता करके लोगों की हत्या करने, सेना तथा पुलिस पर हमला करने के लिए हर समय बाध्य करते रहते हैं। तथाकथित बुद्धजीवी-कम्युनिस्ट और धर्मनिरपेक्षवादी लोग हमेशा राष्ट्रविरोधी विचारों का समर्थन और प्रचार करते रहते हैं। देश में स्थापित सरकार का मुख्य कार्य राष्ट्र के सम्पूर्ण भूभाग की, सभी नागरिकों की तथा प्राचीन संस्कृति की रक्षा करना है। जन्म देने वाली माता, भूमि माता, गौ माता, वेदमाता की निरन्तर रक्षा करना हम सब राष्ट्रवासियों का परम कर्तव्य है। जो देशद्रोही इस देश को तोड़ने का प्रयास कर रहे हैं उन सबको कठोर दण्ड मिलना चाहिये अथवा देश से निष्कासित कर देना चाहिये। अंग्रेज शासन काल में हमारे देश को तोड़ने के लिए 'आर्य बाहर से आये और द्रविड़ों से युद्ध कर उनको दक्षिण की ओर भगा दिया' इस प्रकार के काल्पनिक इतिहास पढ़ाते रहे जो आज भी प्रचलित है। हमारे देशभक्त विद्वानों के लिखे इतिहास और वैदिक सिद्धान्तों को पढ़ाया नहीं जा रहा है। यह देश हम सब देशवासियों की जागरूकता से ही सुरक्षित रह सकता है। क्योंकि वर्तमान चुनाव प्रणाली पूर्णत: अवैदिक है इसलिये धन खर्च कर चुनाव लड़ने वाले निर्वाचित प्रतिनिधि का पूर्ण ईमानदार, निष्पक्ष और देशभक्त होना असम्भव है। अपराधी और बाहुबली लोग चुनाव लड़कर संसद और विधान सभाओं में पहुँच रहे हैं। न्यायपालिका में वकील तथा न्यायाधीश भी धनबल और संख्याबल के आगे विवश हो जाते हैं। हमारे देश के अधिकांश टी.वी. चैनल और दैनिक समाचार पत्र, इन्टरनेट आदि प्रचार माध्यमों को बड़े-बड़े कार्पोरेट घराने चलाते हैं, वे अपनी स्वार्थपूर्ति और धनप्राप्ति के लिये ही समाचार और अन्य प्रचार सामग्री दिखाते और छापते हैं, इसलिये इनकी देशभक्ति पूर्णत: संदेहास्पद है। लगभग एक हजार वर्ष की परतन्त्रता और सन् १९४७ के राष्ट्र विभाजन से बहुत भारी जन, धन, भूमि आदि की हानि हुई। अब पुन: इस प्रकार की कोई हानि न हो इसके लिये हम सब वेदानुयायी ऋषिभक्त आर्यसमाजियों को सदा जागरूक रहना होगा।

प्रात:कालीन प्रवचन में **स्वामी मुक्तानन्द जी** ने कहा

कि हमें मनुष्य जन्म मिला है इसे सफल बनाना चाहिये। जो मनुष्य अपने कर्त्तव्य कर्मों का विचार नहीं करते वे मनुष्य शरीर में होते हुए भी पशु के समान हैं। हमारे जो पूर्वज अपने जीवन को सफल बना चुके हैं उनका अनुकरण करके हम आदर्श जीवन व्यतीत करते हुए श्रेष्ठ और महान बन सकते हैं। इसके लिये ऋषियों के ग्रन्थों का गम्भीरतापूर्वक अध्ययन करना चाहिये। वे मनुष्य धन्य हैं जो विद्या ग्रहण में सुख मानते हैं तथा धर्म का पालन करने में कष्ट सहन करते हैं, तपस्वी होते हैं। अपने और दूसरों के दुखों को दूर करने का सर्वोत्तम साधन विद्या ही है। संसार के अन्य सब भौतिक सुखों की तुलना में विद्या का सुख हजारों गुना अच्छा है। जो विद्या के महत्त्व को जानता है वह उसकी प्राप्ति में कष्ट नहीं मानता किन्तु रुचिपूर्वक अध्ययन-अध्यापन करता है। विद्या ग्रहण करते समय निराश नहीं होता। हर क्षण विद्या की वृद्धि से उसे आन्तरिक आनन्द प्राप्त होता है। अनेक शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त होने से व्यक्ति धार्मिक, ईश्वरभक्त, राष्ट्रभक्त, सभ्य, जितेन्द्रिय, परोपकारी, सत्यवादी, अभिमानरहित, विचारशील, पवित्र, शिष्ट और व्यवहारकुशल हो जाता है।

आर्यसमाज स्थापना दिवसः-इस अवसर पर ऋषि उद्यान में विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया। **उपाचार्य श्री सत्येन्द्र जी** ने कहा कि आज का दिन हम सबके लिए महत्वपूर्ण है। आज ही के दिन युग सृष्टा महान् विद्वान् महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने मुम्बई में आर्य समाज की स्थापना करके समाज सुधार और वेद प्रचार कार्य को विशेष गति प्रदान किया। वेद प्रचार केन्द्र के रूप में परोपकारिणी सभा, आर्य समाजों, आर्य प्रतिनिधि सभाओं, गुरुकुल, वानप्रस्थ-संन्यास आश्रम, आर्य कुमार सभा, वैदिक साहित्य प्रकाशक तथा आर्य समाज से सम्बन्धित अन्य संस्थाओं ने देश के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य किया तथा आज भी कार्यरत हैं। वर्तमान में राष्ट्र-प्रहरी के रूप में सबसे अधिक पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन आर्य समाजों, गुरुकुलों और सम्बन्धित संस्थाओं से ही हो रहा है। देश के किसी भी भाग में प्राकृतिक आपदा भूकम्प, बाढ़ आदि संकट के समय आर्यवीर दल और आर्य समाज सहायता के लिए सदैव तत्पर रहता है। महात्मा गांधी से भी पहले महर्षि दयानन्द जी ने स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग पर बल दिया। आर्य समाज ने अपने स्थापना काल से ही समाज सुधार का क्रान्तिकारी उल्लेखनीय कार्य किया। मूर्तिपूजा, कब्रपूजा, फलित ज्योतिष, जन्मना जातिप्रथा, ब्राह्मणवाद, गुरुडमवाद, अन्य सब पाखंड का खण्डन किया और अष्टांगिक योगाभ्यास द्वारा ईश्वर की सच्ची उपासना का प्रचार-प्रसार किया। पशुबलिप्रथा, बाल विवाह, धर्मान्तरण का विरोध किया। गौ रक्षा, स्त्री शिक्षा, अछूतोद्धार, विधवा विवाह, अनाथ पालन, वेद प्रचार, स्वतन्त्रता आन्दोलन, राष्ट्रीय एकता, हिन्दी भाषा प्रचार आदि महत्वपूर्ण राष्ट्र रक्षा और राष्ट्र निर्माण का कार्य किया। आर्य समाज स्वार्थपूर्ति से दूर रहकर परोपकार में दिन-रात लगा हुआ है। आज से हम आर्यों का नव वर्ष प्रारम्भ हो रहा है। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का आरम्भ ही वास्तविक नववर्ष का आरम्भ है जो पूर्ण वैज्ञानिक है।

१५ अप्रैल शुक्रवार को **रामनवमी** के अवसर पर **श्री सत्येन्द्र सिंह आर्य जी** ने कहा कि आदर्श महापुरुषों का जन्म दिन इसलिये मनाया जाता है जिससे हम उनके गुणों का चिन्तन, मनन करें और अपने जीवन में उसे उतारने का प्रयत्न करें। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी वैदिक धर्म और संस्कृति के महान् नायक थे। उनके नाम के साथ मर्यादा पुरुषोत्तम इसलिये जोड़ा जाता है क्योंकि उन्होंने अपने जीवन में वेदोक्त सप्त मर्यादाओं का कभी उल्लंघन नहीं किया। प्रत्येक परिस्थिति में सदा शान्त रहते थे। जब उनके राज्याभिषेक की घोषणा हुई तब वे विशेष प्रसन्न नहीं हुए और जब १४ वर्ष के वनवास का आदेश मिला तब वे दुःखी भी नहीं हुए। उन्होंने वनवास के समय सीता और लक्ष्मण के साथ वन में यज्ञ और संध्योपासना करते हुए साधना तथा संयम का जीवन व्यतीत किया। इस अवसर पर **ब्र. शिवनाथ जी** ने कहा कि श्री रामचन्द्र जी के जीवन से हमें प्रेरणा मिलती है कि हमें अपने आचरण में मर्यादाओं का ध्यान रखना चाहिये जिससे हमारा जीवन श्रेष्ठ बने। **ब्र. भूदेव जी** ने कहा कि श्री रामचन्द्र जी वेदानुकूल आदर्श जीवन यापन करते हुए राष्ट्र रक्षा एवं कर्त्तव्य पालन के लिये सदा तत्पर रहे। उनकी मूर्ति आदि की पूजा न करके उनके गुणों को जीवन में धारण करना ही उनकी सच्ची पूजा होगी। **ब्र. देवेन्द्र जी** ने पं. सत्यपाल पथिक का एक गीत प्रस्तुत किया-राम जी के गीत गाओ रामनवमी आ गई। प्रेम की गंगा बहाओ रामनवमी आ गई। **ब्र. संतोष जी** ने कहा श्री रामचन्द्र जी जैसे आदर्श

महापुरुष का निर्माण ऋषियों ने वैदिक सिद्धान्तों के आधार पर किया। अपने जीवन में बहुत कठिनाई होने पर भी वे कभी निराश नहीं हुए। रावण को मारकर लंका का शासन विभीषण को सौंप दिया, उसे अपने अधीन नहीं किया। कार्यक्रम का संचालन **ब्र. राजेश जी** ने किया।

सायंकालीन सत्संग में उपदेश मंजरी पुस्तक पर चर्चा करते हुए **उपाचार्य श्री सत्येन्द्र जी** ने कहा कि महर्षि दयानन्द जी वेद, उपनिषद्, मनुस्मृति आदि में कहे अनुसार ही देवताओं का स्वरूप और उसकी पूजा मानते थे। देवता दो प्रकार के होते हैं-१. चेतन, २. जड़। तैत्तिरीय आरण्यक में माता, पिता, आचार्य और अतिथि को देवता कहा गया है। क्योंकि माता जन्म देकर पालन पोषण करती है, पिता रक्षा करता है, आचार्य ज्ञान देता है, अतिथि धर्म और विद्या का उपदेश करके सन्मार्ग दिखाता है, इसलिये ये सब देवता हैं। स्त्री के लिए पति देव और पुरुष के लिए स्वपत्नी देवी अर्थात् पूजनीय है। इन देवों की पूजा का अर्थ सत्कार करना, आज्ञापालन करना तथा अनुकूल प्रिय आचरण करना आदि है। अन्न, वस्त्र, धन और प्रियवचन से सम्मान करना भी पूजा ही है। जिन घरों में स्त्रियों का सम्मान होता है वहाँ देव अर्थात् श्रेष्ठ गुण वाले मनुष्यों का निवास होता है। उस परिवार में अत्यन्त योग्य सन्तान उत्पन्न होते हैं। पाश्चात्य देशों में इस प्रकार माता-पिता के सम्मान की विचारधारा नहीं होने के कारण वृद्ध होने पर उन लोगों का जीवन वृद्धाश्रम में ही व्यतीत होता है। स्वामी जी ने सत्यार्थ प्रकाश में बताया है कि मूर्तिपूजा से पन्द्रह प्रकार की हानि होती है। मूर्तियों में प्राण-प्रतिष्ठा आदि केवल अज्ञानी और मूर्ख मनुष्यों को ठगने की कला है।

सोमयाग हेतु गुरुकुल के आचार्यों, ब्रह्मचारियों एवं अन्य आश्रमवासियों द्वारा केरल यात्रा:- इस वर्ष भी केरल के पेडुमुड्डीयूर जिला पालक्काड में सोमयाग का आयोजन किया गया। यह यज्ञ दिन-रात चलता है। इस यज्ञ में सोम नामक औषधि की विशेष आहुति दी जाती है। इसे देखने के लिए देश-विदेश के यज्ञकर्ता और जिज्ञासु लोग यहाँ पहुँचते हैं। ऋषि उद्यान से आचार्य श्री सत्यजित् जी के साथ ब्रह्मचारियों, वानप्रस्थियो, संन्यासियों तथा आश्रमवासियों का एक दल बुधवार ६ अप्रैल को रात १० बजे रेलगाड़ी से रवाना हुआ।

रविवारीय सायंकालीन प्रवचन में **ब्र. पुरुषोत्तम जी** ने कहा कि जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए सबसे पहला साधन संकल्प है। बिना संकल्प के किसी भी क्षेत्र में कोई व्यक्ति सफलता प्राप्त नहीं कर सकता। चाहे वह पढ़ाई-लिखाई हो या व्यापार, व्यवसाय, उद्योग का क्षेत्र हो अथवा राष्ट्र को सही दिशा में आगे ले जाने के लिए राजनैतिक, सामाजिक या धार्मिक क्षेत्र हो। संकल्प के साथ ही अपने लक्ष्य की पूर्ण जानकारी हो। लक्ष्य का निश्चय करने के पश्चात् निरन्तर कठोर परिश्रम, अच्छा स्वास्थ्य, सत्संग, गुरुजनों का मार्गदर्शन, मन की पवित्रता आदि होना चाहिये।

*** डॉ. धर्मवीर जी की विदेश प्रचार यात्रा:-**

(क) १-४ अप्रैल- आर्य समाज शिकागो।

(ख) ७-१२ अप्रैल-आर्य समाज अटलाण्टा।

(ग) १६-१७ अप्रैल- आर्य समाज लोस ऐंजिल्स।

*** आचार्य सोमदेव जी का प्रचार कार्यक्रम:-**

(क) १-२ अप्रैल- पाली आर्य महासम्मेलन में उद्बोधन।

(ख) २-३ अप्रैल- सहारनपुर में ऋग्वेद पारायण यज्ञ में प्रवचन।

(ग) ८-१० अप्रैल- आर्यसमाज खलासी लाइन, सहारनपुर के वार्षिकोत्सव में प्रवचन।

(घ) ११-१७ अप्रैल-वानप्रस्थ साधक आश्रम रोजड़ शिविर में प्रशिक्षण।

(ङ) १८-२४ अप्रैल आर्यसमाज, राजेन्द्र नगर, दिल्ली के वार्षिकोत्सव में।

***आचार्य कर्मवीर जी का प्रचार कार्यक्रम:-**

(क) ११ अप्रैल- श्री सोनू जी, सहारनपुर के घर पर पारिवारिक यज्ञ एवं सत्संग।

(ख) १२ अप्रैल- श्री जितेश जी राठी, सहारनपुर के घर पारिवारिक यज्ञ एवं सत्संग।

***श्री सत्येन्द्र सिंह आर्य का प्रचार-कार्यक्रम-**

(क) ८से १० अप्रैल तक आर्य समाज सैक्टर १० व १०ए, गुड़गांव (हरियाणा) में यज्ञ एवं वेद प्रवचन।

(ख) श्री मलिक जी के परिवार में गृह-प्रवेश का यज्ञ।

अग्नि और जल संसार के सब व्यवहारों के कारण हैं, इस से गृहस्थजन विशेष कर अग्नि और जल के गुणों को जानें और गृहस्थ के सब काम सत्य व्यवहार से करें।

- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.२४

ईश्वर की सिद्धि में प्रत्यक्षादि प्रमाण सिद्ध नहीं हैं

(सत्यार्थ प्रकाश द्वादश समुल्लास के आधार पर खण्डन)

- ब्र. राजेन्द्रार्य

चारवाक, बौद्ध, जैन आदि नास्तिक मतों का मानना है कि ईश्वर की सिद्धि प्रत्यक्षादि प्रमाणों से सिद्ध नहीं हो सकती। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने वैचारिक क्रान्तिकारी ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाशः द्वादश समुल्लास में ईश्वर के दार्शनिक स्वरूप एवं वैज्ञानिक विवेचन के आधार पर नास्तिकों की इस मान्यता का खण्डन किया है। ईश्वर प्रत्यक्ष न होने की जिस युक्ति के भरोसे नास्तिकों के सब सम्प्रदाय और आधुनिक वैज्ञानिक गण फूले नहीं समा रहे थे, स्वामी दयानन्द ने उनकी जड़ ही काट दी। महर्षि ने कहा कि ईश्वर का प्रत्यक्ष होता है। ईश्वर का प्रत्यक्ष कैसे होता है, एतद् विषयक स्वामी जी की मान्यता के विचार यहाँ पर उद्धृत हैं-

ईश्वर का लक्षण वा स्वरूप - स्वामी दयानन्द सरस्वती ने लगभग अपने सभी ग्रन्थों में ईश्वर के विषय में कुछ न कुछ अवश्य लिखा है। आर्य समाज के प्रथम व द्वितीय नियम में भी ईश्वर की चर्चा की है।[१] ऋषि दयानन्द ने अपने ग्रन्थों में ईश्वर विषयक ऐसे अनेक मतों का निराकरण किया है, जिसमें ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार नहीं किया जाता है या अन्यथा रूप में स्वीकार किया जाता है। नास्तिक मूर्धन्य चारवाक की चर्चा करते हुए वे लिखते हैं-''कोई एक बृहस्पति नामा पुरुष हुआ था जो वेद, ईश्वर और यज्ञादि उत्तम कर्मों को नहीं मानता था। उसके अनुसार लोकसिद्ध राजा ही परमेश्वर है।''[२] ईश्वर विषयक इस चारवाक मत का निराकरण करते हुए स्वामी दयानन्द लिखते हैं- ''यद्यपि राजा को ऐश्वर्यवान और प्रजा पालन में समर्थ होने से श्रेष्ठ मानें तो ठीक है, परन्तु जो अन्यायकारी पापी राजा हो, उसको भी परमेश्वरवत् मानते हो तो तुम्हारे जैसा कोई भी मूर्ख नहीं।''[३] स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने ग्रन्थों में ईश्वर के गुणों के वर्णन के सन्दर्भ में अनेक वेद मन्त्र प्रमाण स्वरूप प्रस्तुत किये हैं। उनमें से कुछ प्रमाण यहाँ पर उद्धृत हैं-

ऋचो अक्षरे परमे व्योमन्यस्मिन्देवा अधि विश्वे निषेदुः।
यस्तन्न वेद किमृचा करिष्यति य इत्तद्विदुस्त इमे समासते।।

- ऋग्वेद १/१६४/३९

अर्थात् जो सब दिव्य गुण-कर्म-स्वभाव-विद्यायुक्त, और जिसमें पृथिवी सूर्य्यादि लोक स्थित हैं, और जो आकाश के समान व्यापक, सब देवों का देव परमेश्वर है, उसको जो मनुष्य न जानते न मानते और उसका ध्यान नहीं करते, वे नास्तिक मन्दमति सदा दुःख सागर में डूबे ही रहते हैं। इसलिये सर्वदा उसी को जानकर सब मनुष्य सुखी होते हैं।[४]

प्रश्नः वेद में ईश्वर अनेक हैं, इस बात को तुम मानते हो वा नहीं?

उत्तरः नहीं मानते, क्योंकि चारों वेदों में ऐसा कहीं नहीं लिखा, जिससे अनेक ईश्वर सिद्ध हों, किन्तु यह तो लिखा है कि ईश्वर एक है।[५]

ईशा वास्यमिदꣳ सर्वंयत्किञ्च जगत्याञ्जगत्।
तेन व्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्।।

- यजुर्वेद ४०/१

हे मनुष्य! जो कुछ इस संसार में जगत् है, उस सब में व्याप्त होकर (जो उसका) नियन्ता है वह ईश्वर कहाता है। उससे डर कर तू अन्याय से किसी के धन की आकांक्षा मत कर। उस अन्याय के त्याग और न्यायाचरण रूप धर्म से अपने आत्मा से आनन्द को भोग।[६]

परमेश्वर का जैसा गुण-कर्म-स्वभाव है, वैसा ही जानकर मानना ही ज्ञान-विज्ञान कहाता है, उल्टा अज्ञान है। महर्षि पतञ्जलि ने योगसूत्र में कहा है-

क्लेश कर्मविपाकाशयैर परामृष्टः पुरुषविशेष ईश्वरः।

-योगदर्शन १/२४

जो अविद्यादि क्लेश, कुशल-अकुशल, इष्ट-अनिष्ट और मिश्र फलदायक कर्मों की वासना से रहित है, वह सब जीवों से विशेष ईश्वर कहाता है।

स्वामी दयानन्द ईश्वर के स्वरूप का उल्लेख इस प्रकार करते हैं-

'ईश्वर' कि जिसके ब्रह्म परमात्मादि नाम हैं, जो सच्चिदानन्दादि लक्षणयुक्त है, जिसके गुण, कर्म, स्वभाव पवित्र हैं। जो सर्वज्ञ, निराकार, सर्वव्यापक, अजन्मा, अनन्त, सर्वशक्तिमान, दयालु, न्यायकारी , सब सृष्टि का कर्त्ता, धर्त्ता, हर्त्ता, सब जीवों को कर्मानुसार सत्य न्याय से फलदाता आदि लक्षणयुक्त है, उसी को परमेश्वर मानता हूँ।[७]

जीव और ईश्वर का स्वरूप गुण-कर्म-स्वभाव - **प्रश्नः** जीव और ईश्वर का स्वरूप गुण-कर्म-स्वभाव कैसा है?

उत्तरः दोनों चेतन स्वरूप हैं। स्वभाव दोनों का पवित्र, अविनाशी और धार्मिकता आदि है, परन्तु परमेश्वर के सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय, सब को नियम में रखना, जीवों को पाप पुण्यों के फल देना आदि धर्मयुक्त कर्म हैं और जीव के सन्तानोत्पति, उनका पालन, शिल्प विद्या आदि अच्छे बुरे कर्म हैं। ईश्वर के नित्यज्ञान, आनन्द, अनन्त बल आदि गुण हैं और जीव के-

इच्छाद्वेष प्रयत्नसुख दुःख ज्ञानान्यात्मनो लिङ्गमिति।

-न्याय दर्शन १/१/१०

प्राणापाननिमेषोन्मेषजीवनमनोगतीन्द्रिया-
न्तरविकाराः सुख-दुःखे
इच्छाद्वेष प्रयत्नाश्चात्मनो लिङ्गानि।

- वैशेषिक दर्शन ३/२/४

'इच्छा' = पदार्थों की प्राप्ति की अभिलाषा, 'द्वेष' = दुःखादि की अनिच्छा वैर, 'पुरुषार्थ' =बल, 'सुख' = आनन्द, 'दुःख' =विलाप, अप्रसन्नता, 'ज्ञान'=विवेक पहिचानना ये तुल्य हैं। परन्तु वैशेषिक में 'प्राण'= प्राणवायु को बाहर निकालना, 'अपान' = प्राणवायु को भीतर लेना, 'निमेष' =आँख को मींचना, 'उन्मेष' = आँख को खोलना, 'जीवन' = प्राण का धारण करना, 'मन' = निश्चय स्मरण और अहंकार करना, 'गति'= चलना, 'इन्द्रिय'= सब इन्द्रियों को चलाना, 'अन्तरविकार'= भिन्न-भिन्न क्षुधा-तृषा, हर्ष-शोकादि युक्त होना (ये विशेष हैं।) ये जीवात्मा के गुण परमात्मा (के गुणों) से भिन्न हैं। इन्हीं से आत्मा की प्रतीति करनी, क्योंकि वह स्थूल नहीं है।[८]

जब तक आत्मा देह में होती है, तभी तक ये गुण प्रकाशित रहते हैं और जब आत्मा शरीर छोड़ चली जाती है, तब ये गुण शरीर में नहीं रहते। जिसके होने से जो हो और न होने से न हो, वे गुण उसी के होते हैं। जैसे दीप और सूर्यादि के न होने से प्रकाशादि का न होना और होने से होना, **वैसे जीव और परमात्मा का विज्ञान गुण द्वारा होता है।**[९]

ईश्वर अनादि है - ईश्वर भूत, वर्तमान, भविष्यत तीनों कालों के बन्धन में न आने के कारण अनुत्पत्ति धर्मक है, अतः अनादि और जो वस्तु अनादि होती है, वह अमरणधर्मा होती है और जो अमृत होती है, वह अनन्त होती है। अनादि अनन्त को ही ''सत्'' कहते हैं। स्वामी दयानन्द ने अथर्ववेद के मन्त्र को उद्धृत करते हुए ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका[१०] में कहा है-

यो भूतञ्च भव्यञ्च सर्वं यश्चाधितिष्ठति स्वर्यस्य
च केवलं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः।

- अथर्ववेद १०/८/१

अर्थ- यो भूत, भविष्यति, वर्तमानान् कालान् सर्वं जगच्चाधितिष्ठति सर्वाधिष्ठाता सन् कालादूर्ध्वं विराजमानोऽस्ति। दयानन्दर्षि।।

प्रश्नः ईश्वर सादि है वा अनादि?

उत्तरः अनादि। अर्थात् जिसका आदि कोई कारण वा समय न हो, उसको अनादि कहते हैं।

अनादि पदार्थ तीन हैं- एक ईश्वर, द्वितीय जीव, तीसरा प्रकृति, अर्थात् जगत् का कारण। इन्हीं को नित्य भी कहते हैं। जो नित्य पदार्थ हैं, उनके-गुण-कर्म स्वभाव भी नित्य हैं। ईश्वर, जीव और प्रकृति के अनादित्व में वेदादिशास्त्रों के निम्न प्रमाण उद्धृत हैं-

द्वा सुपर्णा सयुजासखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नयो अभि चाकशीति।।१।।

- ऋग्वेद १/१६४/२०

शाश्वतीभ्यः समाभ्यः।। २।। - यजुर्वेद ४०/८

(द्वा) जो ब्रह्म और जीव दोनों (सुपर्णा) चेतनता और पालनादि गुणों से सदृश (सयुजा) व्याप्य-व्यापक भाव से संयुक्त (सखाया) परस्पर मित्रतायुक्त सनातन अनादि हैं और (समानम्) वैसा ही (वृक्षम्) अनादि मूलरूप कारण और शाखारूप कार्ययुक्त वृक्ष अर्थात् जो स्थूल होकर प्रलय में छिन्न-भिन्न हो जाता है, वह तीसरा अनादि पदार्थ। इन

तीनों के गुण, कर्म और स्वभाव भी अनादि हैं। (तयोरन्यः) इन जीव और ब्रह्म में से एक जो जीव है, वह इस वृक्ष रूप संसार में पाप-पुण्य रूप फलों को (स्वाद्वत्ति) अच्छे प्रकार भोक्ता है और दूसरा परमात्मा कर्मों के फलों को (अनशन्) न भोगता हुआ चारों ओर अर्थात् भीतर-बाहर सर्वत्र प्रकाशमान हो रहा है। जीव से ईश्वर, ईश्वर से जीव और दोनों से प्रकृति भिन्न स्वरूप; तीनों अनादि हैं।। १।।

(शाश्वतीभ्यः०) अर्थात् अनादि सनातन जीवरूप प्रजा के लिए वेद द्वारा परमात्मा ने सब विद्याओं का बोध किया है।।२।।

अजामेकां लोहितशुक्लकृष्णां बह्वीः
प्रजाः सृजमानां स्वरूपाः।
अजो ह्येको जुषमाणोऽनुशेते जहात्येनां
भुक्त भोगामजोऽन्यः।।

– श्वेताश्वतर उपनिषद् ४/५

प्रकृति, जीव और परमात्मा तीनों अज अर्थात् जिनका जन्म कभी नहीं होता और न कभी ये जन्म लेते अर्थात् ये तीन सब जगत् के कारण हैं। इनका कारण कोई नहीं। इस अनादि प्रकृति का भोग अनादि जीव करता हुआ फँसता है और उसमें परमात्मा न फँसता और न उसका भोग करता है।[१२]

ईश्वर का व्यापकत्व – प्रश्नः ईश्वर व्यापक है, वा किसी देश-विशेष में रहता है?

उत्तरः व्यापक है। क्योंकि जो एक देश में रहता तो सर्वान्तर्यामी सर्वज्ञ, सर्वनियन्ता, सब का सृष्टा, सब का धर्त्ता और प्रलय कर्त्ता नहीं हो सकता। अप्राप्त देश में कर्त्ता की क्रिया का होना असम्भव है।[१३]

इस विषय में स्वामी दयानन्द ने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में ऋग्वेद का निम्न मन्त्र उद्धृत किया है-

तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः।
दिवीव चक्षुराततम्।।

– ऋग्वेद १/२२/२०

व्यापक जो परमेश्वर है उसका अत्यन्त उत्तम आनन्दस्वरूप जो प्राप्ति होने के योग्य अर्थात् जिसका नाम मोक्ष है, उसको विद्वान् लोग सब काल में देखते हैं। वह कैसा है कि सब में व्याप्त हो रहा है और उसमें देश, काल और वस्तु का भेद नहीं है अर्थात् उस देश काल में था और इस काल में नहीं,उस वस्तु में है और इस वस्तु में नहीं, ऐसा नहीं है। इसी कारण से वह पद सब जगह में सबको प्राप्त होता है, क्योंकि वह ब्रह्म सब ठिकाने परिपूर्ण है। इसमें यह दृष्टान्त है कि जैसे सूर्य का प्रकाश आवरणरहित आकाश में व्याप्त होता है, इसी प्रकार परब्रह्म पद भी स्वयं प्रकाश, सर्वत्र व्याप्तवान् हो रहा है। उस पद की प्राप्ति से कोई भी प्राप्ति उत्तम नहीं है, इसलिये चारों वेद उसी की प्राप्ति कराने के लिये विशेष करके प्रतिपादन कर रहे हैं।[१४]

ईश्वर सर्वशक्तिमान है – प्रश्नः ईश्वर सर्वशक्तिमान है, वा नहीं?

उत्तरः है। परन्तु जैसा तुम सर्वशक्तिमान शब्द का अर्थ जानते हो, वैसा नहीं। किन्तु 'सर्वशक्तिमान' शब्द का यही अर्थ है कि ईश्वर अपने काम उत्पत्ति, पालन, प्रलय आदि और सब जीवों के पुण्य-पाप की यथायोग्य व्यवस्था करने में किंचित् भी किसी की सहायता नहीं लेता, अर्थात् अपने अनन्त सामर्थ्य से ही सब अपना काम पूर्ण कर लेता है।[१५]

ईश्वर निराकार है, साकार नहीं – प्रश्नः ईश्वर साकार है वा निराकार?

उत्तरः निराकार। क्योंकि जो साकार होता तो व्यापक नहीं हो सकता। जब व्यापक न होता तो सर्वज्ञादि गुण भी ईश्वर में न घट सकते। क्योंकि परिमित वस्तु में गुण-कर्म-स्वभाव भी परिमित रहते हैं तथा शीतोष्ण क्षुधा-तृषा और रोग-दोष छेदन-भेदन आदि से रहित नहीं हो सकता, इससे यही निश्चित है कि ईश्वर निराकार है। जो साकार हो तो उसके नाक, कान, आँख आदि अवयवों का बनाने हारा दूसरा होना चाहिये। क्योंकि जो संयोग से उत्पन्न होता है, उसको संयुक्त करने वाला निराकार चेतन अवश्य होना चाहिये।[१६]

शेष भाग अगले अंक में.....

जैसे वेद के वेत्ता विद्वान् लोग वेदानुकूल मार्ग से परमेश्वर को जानकर उत्तम ज्ञान से उसका सेवन करते हैं वैसे ही जगदीश्वर सब को उपासनीय अर्थात् सेवन करने के योग्य है, वैसे ज्ञान के विना ईश्वर की उपासना कभी नहीं हो सकती क्योंकि विज्ञान ही उसकी अवधि है।

– महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४१

विश्व में प्रथम बार वेद ऑन लाईन

आज विज्ञान का युग है, विज्ञान ने प्रगति भी बहुत की हैं, इस प्रगति में तन्त्रजाल (इन्टरनेट) ने लोगों की जीवन शैली को बदल-सा दिया है। विश्व के किसी देश, किसी भाषा, किसी वस्तु, किसी जीव आदि की किसी भी जानकारी को प्राप्त करना, इस तन्त्रजाल ने बहुत ही सरल कर दिया है। विश्व के बड़े-बड़े पुस्तकालय नेट पर प्राप्त हो जाते हैं। अनुपलब्ध-सी लगने वाली पुस्तकें नेट पर खोजने से मिल जाती हैं।

आर्य जगत् ने भी इस तन्त्रजाल का लाभ उठाया है, आर्य समाज की आज अनेक वेबसाइटें हैं। इसी शृंखला में 'आर्य मन्तव्य' ने वेद के लिए एक बहुत बड़ा काम किया है। 'आर्य मन्तव्य' ने वेद को सर्वसुलभ करने के लिए ***onlineved.com*** नाम से वेबसाइट बनाई है। इसकी निम्नलिखित विशेषताएँ हैं-

१. विश्व में प्रथम बार वेदों को ऑनलाईन किया गया है, जिसको कोई भी इन्टरनेट चलाने वाला पढ़ सकता है। पढ़ने के लिए पी.डी.एफ. किसी भी फाईल को डाउनलोड करने की आवश्यकता नहीं है।

२. इस साईट पर चारों वेद मूल मन्त्रों के साथ-साथ महर्षि दयानन्द सरस्वती, आचार्य वैद्यनाथ, पं. धर्मदेव विद्यामार्तण्ड, पं. हरिशरण सिद्धान्तालंकार व देवचन्द जी आदि के भाष्य सहित उपलब्ध हैं।

३. इस साईट पर हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी तथा मराठी भाषाओं के भाष्य उपलब्ध हैं। अन्य भाषाओं में भाष्य उपलब्ध कराने के लिए काम चल रहा है, अर्थात् अन्य भाषाओं में भी वेद भाष्य शीघ्र देखने को मिलेंगे।

४. यह विश्व का प्रथम सर्च इंजन है, जहाँ पर वेदों के किसी भी मन्त्र अथवा भाष्य का कोई एक शब्द भी सर्च कर सकते हैं। सर्च करते ही वह शब्द वेदों में कितनी बार आया है, उसका आपके सामने स्पष्ट विवेचन उपस्थित हो जायेगा।

५. इस साईट का सर्वाधिक उपयोग उन शोधार्थियों के लिए हो सकता है, जो वेद व वैदिक वाङ्मय में शोधकार्य कर रहे हैं। उदाहरण के लिए किसी शोधार्थी का शोध विषय है 'वेद में जीव', तब वह शोधार्थी इस साईट पर जाकर 'जीव' लिखकर सर्च करते ही जहाँ-जहाँ जीव शब्द आता है, वह-वह सामने आ जायेगा। इस प्रकार अधिक परिश्रम न करके शीघ्र ही अधिक लाभ प्राप्त हो सकेगा।

६. इस साईट का उपयोग विधर्मियों के उत्तर देने में भी किया जा सकता है। जैसे अभी कुछ दिन पहले एक विवाद चला था कि 'वेदों में गोमांस का विधान है' ऐसे में कोई भी जनसामान्य व्यक्ति इस साईट पर जाकर 'गो' अथवा 'गाय' शब्द लिखकर सर्च करें तो जहाँ-जहाँ वेद में गाय के विषय में कहा गया है, वह-वह शीघ्र ही सामने आ जायेगा और ज्ञात हो जायेगा कि वेद गो मांस अथवा किसी भी मांस को खाने का विधान नहीं करता।

७. विधर्मी कई बार विभिन्न वेद मन्त्रों के प्रमाण देकर कहते हैं कि अमुक मन्त्र में ये कहा है, वह कहा है या नहीं कहा। इसकी पुष्टि भी इस साईट के द्वारा हो सकती है, आप जिस वेद का जो मन्त्र देखना चाहते हैं, वह मन्त्र इस साईट के माध्यम से देख सकते हैं।

इस प्रकार अनेक विशेषताओं से युक्त यह साईट है। इस साईट को बनाने वाला 'आर्य मन्तव्य' समूह धन्यवाद का पात्र है। वेद प्रेमी इस साईट का उचित लाभ उठाएँगे, इस आशा के साथ।

- आचार्य सोमदेव, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

इस बात का निश्चय है कि ब्रह्मचर्य्य उत्तम शिक्षा विद्या शरीर और आत्मा का बल आरोग्य पुरुषार्थ ऐश्वर्य सज्जनों का संग आलस्य का त्याग यम-नियम और उत्तम सहाय के विना किसी मनुष्य से गृहाश्रम धारा जा नहीं सकता।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.३१

स्तुता मया वरदा वेदमाता–३३

असपत्ना सपत्नध्नी जयन्त्यभि भूवरी
यथाहमस्य वीरस्य विराजानि जनस्य च।

मन्त्र का उत्तरार्ध कहता है– मैं केवल अपने पति के लिये ही स्वीकार्य या मान्य हूँ, ऐसा नहीं है। मैं अपने साथ रहने वाले सभी मनुष्यों के लिये स्वीकार्य हूँ। यह एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि कोई व्यक्ति जब अपने आपको शक्तिशाली, महत्त्वपूर्ण और अधिकार सम्पन्न समझता है, उस समय वह अपने लिये महत्त्वपूर्ण हो सकता है, परन्तु सबके लिये स्वीकार्य होना तभी सम्भव है, जब वह सामर्थ्यवान होकर भी सर्वोपकारी हो, सर्वसुलभ हो। ऐसी अवस्था में ही वह सर्वजन स्वीकार्य और सर्वजन मान्य हो सकता है।

विवाह में शिलारोहण के साथ लाजा होम किया जाता है, तब इन्हीं दो बातों के विषय में वर–वधू को ध्यान दिलाया जाता है कि हमें अपने वैवाहिक जीवन में दृढ़ता रखनी है। मैं दृढ़ रहूँगा, तुम भी मेरे साथ दृढ़ रहना, पत्थर उसका प्रतीक है। जब भाई द्वारा कन्या का पैर शिला पर रखा जाता है और वह मन्त्र पढ़ता है– अरिह – तुम इस शिला पर आरूढ़ हो जाओ, क्योंकि तुमको इस पत्थर की भाँति दृढ़ होकर रहना है। तुम्हारा साथ पत्थर की भाँति दृढ़ व्यक्ति के साथ है, तुम भी दृढ़ रहोगी, तभी साथ रह पाओगी।

जीवन में दृढ़ता के बिना न गति है, न प्रगति है। दृढ़ता से स्थिरता आती है। चञ्चलता अस्थिरता का दूसरा नाम है, स्थिर व्यक्ति बाधाओं को दूर कर सकता है, स्थिर योद्धा ही शत्रुओं का सामना कर सकता है, शत्रुओं पर आक्रमण कर सकता है। भागने वाला अस्थिर व्यक्ति आक्रामक कैसे हो सकता है? इसलिये वर वधू से कहता है– मैं स्थिर हूँ, मैं दृढ़ पत्थर की भाँति हूँ। तुमको भी मेरे साथ रहना है तो पत्थर की तरह दृढ़ होकर रहना होगा, नहीं तो संसार की समस्याओं का और हम पर आक्रमण करने वाले शत्रुओं का नाश नहीं कर सकते।

विवाह की इस प्रक्रिया की रोचकता यह है कि इस विधि को लाजा होम के साथ संभवतः इसीलिये किया जाता है, क्योंकि एक क्रिया के बिना दूसरी क्रिया अधूरी है। प्रथम कार्य दृढ़ होना, दूसरा कार्य अन्यों का उपकार करना है। इसमें उपकार का क्रम भी बताया गया है, क्योंकि उपकार करने का अर्थ कर्त्तव्य को भूलना नहीं है। आहुति के क्रम में कर्त्तव्य का क्रम भी बताया गया है।

लाजा होम की प्रथम आहुति देते हुए वधू कहती है– आज के बाद मेरे कर्त्तव्य में प्राथमिकता पति की है। पति के प्रति मेरा प्रथम कर्त्तव्य है, उसका सम्मान और सत्कार मुझे करना है, वह भी उसी प्रकार मेरा सम्मान करता है। दूसरी आहुति के साथ वधू का कर्त्तव्य घर के निवासियों के साथ है। घर में रहते हुए ऐसा नहीं हो सकता– आपने केवल अपने बारे में सोचकर ऐसा निर्णय कर लिया तो परिवार में विघटन और द्वेष भाव प्रारम्भ हो जायेगा। परिवार के सभी सदस्यों के साथ भी अपने कर्त्तव्य का निर्वाह करना होगा, तभी अपने को और पति को परिवार के साथ बाँध के रखने में वधू समर्थ हो सकती है। तीसरी आहुति देते हुए वधू कहती है– पति और घर के साथ–साथ अपने सामाजिक दायित्वों का भी मुझे निर्वाह करना है। इसमें चाहे मेरे सम्बन्धी लोग हैं, चाहे विद्वान् अतिथि हैं अथवा बुभुक्षित, पीड़ित, असहाय, दुर्बल मनुष्य, बालक, पशु–पक्षी– सभी की चिन्ता करना, उनकी यथासम्भव सहायता सहयोग करना, सान्त्वना देना, यह भी कर्त्तव्य है, तभी ऐसी नारी न केवल अपने पति की प्रेम भाजन होगी, अपितु परिवार एवं समाज के प्रत्येक सदस्य की प्रशंसा प्राप्त करने वाली बन जायेगी।

क्रमशः .....

आर्यजगत् के समाचार

१. प्रवेश प्रारम्भ- धनुर्वेद के महान् आचार्य द्रोण की तप:स्थली एवं कर्मभूमि गुड़गाँव (गुरु ग्राम) में गुरुकुल संचालित है। अति उत्तम भोजन एवं छादन की व्यवस्था के साथ-साथ राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद (एनसीआरटी) नई दिल्ली के पाठ्यक्रम तथा महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक (हरियाणा) से संचालित है। प्रवेश के समय बालक की आयु ८ से ११ वर्ष निर्धारित है। अरावली पर्वत शृंखलाओं के मध्य प्रकृति के शान्त एवं सुरम्य वातावरण में यह संस्थान पूर्णत: आवासीय एवं विद्यार्थियों के स्वास्थ्य संवर्धन के सर्वथा अनुकूल है। अत: अपने बालकों के उत्तम संस्कारों एवं सर्वांगीण विकास के लिए गुरुकुल में प्रवेश करायें। सम्पर्क- ०८१२६५००६७२, ०९८१०५४५९५१

२. स्थापना दिवस मनाया- आर्यसमाज शाहपुरा, जि. भीलवाड़ा, राज. में १४१वाँ आर्यसमाज स्थापना दिवस एवं नवसम्वत्सर पर्व उत्साहपूर्वक मनाया गया। यज्ञ से पूर्व स्वस्तिवाचन, शान्तिकरणम् व प्रार्थना मन्त्रों का पाठ किया गया। यज्ञ में विशेष वैदिक मन्त्रों से आहुतियाँ दी गईं। यज्ञ के पश्चात् वामदेवगान का सस्वर पाठ किया गया। श्री जयदेव जोशी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की व मुख्य अतिथि श्री लालचन्द थे।

३. व्यक्तित्व विकास शिविर- आर्य समाज खेड़ा अफगान, सहारनपुर में २६ व २७ मार्च २०१६ को वार्षिकोत्सव एवं व्यक्तित्व विकास शिविर का आयोजन धूमधाम से किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ यज्ञ से हुआ। बिजनौर से पधारे यजमान श्री अनिरुद्ध कुमार सपत्नीक उपस्थित रहे। देहरादून तपोवन आश्रम से पधारे आचार्य आशीष जी दर्शनाचार्य के ज्ञानवर्धक प्रवचन हुए।

४. नववर्ष सोल्लास मनाया- आर्यसमाज सोजत, जि. पाली, राज. की ओर से हरिजन बस्ती में स्थानीय हनुमान जी के मन्दिर प्रांगण में यज्ञ किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा पद से श्री हीरालाल आर्य ने स्वस्तिवाचन व शान्तिकरण मन्त्रों के वाचन के साथ नव सस्येष्टि की आहुतियाँ दिलाईं, साथ ही भारतीय नववर्ष के सामाजिक, सांस्कृतिक व प्राकृतिक महत्त्व के सम्बन्ध में विशेष जानकारी दी एवं युवा पीढ़ी को नशामुक्त जीवन जीने की प्रेरणा दी। प्रधान श्री दलवीर राय ने सभी को आशीर्वाद देते हुए संगठित रहकर कार्य करने का आह्वान किया। डॉ. श्रीलाल ने नववर्ष की उपयोगिता बताते हुए, इस अवसर पर सभी को यज्ञ करने की प्रेरणा दी।

५. नवसस्येष्टि पर्व सम्पन्न- होलिकोत्सव पर वैदिक रीति से यज्ञ सम्पन्न कर आदर्श रूप में वासन्तीय नवसस्येष्टि पर्व आयोजित कर आर्यसमाज हिरण मगरी, उदयपुर, राज. ने पर्यावरण शुद्धि एवं संरक्षण का अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया। यह समारोह सेक्टर-३ स्थित विवेक पार्क में विवेक पार्क विकास समिति के सहयोग से यज्ञ के पुरोहित प्रो. डॉ. अमृतलाल तापड़िया ने वैदिक मन्त्रोच्चारण के साथ सम्पन्न कराया।

६. शिविर- श्री रमेशचन्द्र त्रिपाठी ने सूचित किया है कि स्वामी अमृतानन्द सरस्वती के सान्निध्य में २५ मई से १ जून २०१६ के मध्य आयोजनीय योग शिविर वैदिक साधन आश्रम तपोवन, नालापानी, देहरादून में नहीं होगा। **अब यह शिविर इन्हीं तिथियों में आर्य गुरुकुल पौंधा, देहरादून में होगा।**

७. वार्षिकोत्सव मनाया- आर्यसमाज रामनगर, खटकरी सीतापुर का तीसरा वार्षिकोत्सव दि. १३ से १५ अप्रैल २०१६ को आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के सदस्य चौ. रणवीर सिंह की उपस्थिति में धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर यज्ञ, भजन, प्रवचन, विभिन्न सम्मेलन आदि का आयोजन किया गया।

८. प्रवेश सूचना- १. स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा स्थापित आर्य समाज के सिद्धान्तों पर आधारित आर्य अनाथालय के वीरेश प्रताप परिसर, १४८८ पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली -२ में कार्यरत रानी दत्ता आर्य विद्यालय व आर्य बाल गृह और आर्य कन्या सदन में निम्न आय वर्ग के अनाथ व निराश्रित बालक-बालिकाओं का प्रवेश कक्षा नर्सरी (४ साल ६ महीने) से कक्षा तीसरी (७ साल) तक प्रारम्भ है। मूल दस्तावेज दिखाकर प्रवेश फार्म लें। निवास,

भोजन, शिक्षा आदि की नि:शुल्क उत्तम व्यवस्था है।

सम्पर्क सूत्र: श्री राजकुमार सिंह, श्री भीष्मपाल सिंह, फोन-०११२३२६०४२८, २३२७२०८४

९. प्रवेश सूचना- २. आर्य समाज के आदर्शों पर संचालित छात्रावास चन्द्र आर्य विद्या मन्दिर देसराज परिसर, सी-ब्लॉक, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली-११००६५ में निम्न आय वर्ग की अनाथ निराश्रित बालिकाओं का प्रवेश छठी से नवमीं कक्षा तक प्रारम्भ हो गया है। कार्यालय में आकर मूल दस्तावेज दिखाकर प्रवेश फार्म लें। निवास, भोजन, शिक्षा आदि की नि:शुल्क उत्तम व्यवस्था है।

सम्पर्क सूत्र: श्रीमती सुमन कपूर, श्रीमती अचला गुप्ता, फोन-०११-२६३१६६०४, २६८४०२२९

१०. प्रतिभाएँ- पूर्व वर्षों की भाँति इस वर्ष भी प्रभात आश्रम के छात्रों ने अपनी प्रतिभा का वर्चस्व स्थापित किया। इस वर्ष भी छात्रवृत्ति, जे.आर.एफ. परीक्षा में सफलता प्राप्त कर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। ये छात्र हैं- ज्वलन्त, नीतीश, अंकित, ललित और कृष्ण।

११. स्थापना दिवस मनाया- आर्य समाज अजमेर के तत्त्वाधान में १४२ वाँ आर्यसमाज स्थापना दिवस हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। सर्वप्रथम आचार्य अमरसिंह शास्त्री के ब्रह्मत्व में वृहद् यज्ञ हुआ, जिसमें यजमान प्रधान प्रो. रासासिंह, श्री सज्जनसिंह कोठारी, श्रीमती प्रेरणा शर्मा, श्री मयंक शर्मा, श्री प्रशान्त शर्मा थे। जेएनयू दिल्ली से पधारे मुख्यवक्ता डॉ. सुधीर कुमार ने अग्नि का अर्थ बताते हुए कहा कि अग्नि शक्ति है, अग्नि ईश्वर है। मुख्य अतिथि न्यायाधिपति लोकायुक्त सज्जनसिंह कोठारी ने आर्य समाज स्थापना दिवस पर सभी आर्यजनों से वेदों के प्रचार करने के लिए कटिबद्ध होने के लिए आह्वान किया। विशिष्ट अतिथि डॉ. कृष्णपालसिंह ने स्वामी दयानन्द की आत्मकथा का प्रसंग देते हुए बताया कि स्वामी दयानन्द ने कहा था ''मेरा कोई स्वतंत्र मत नहीं है, मेरा तो वेद मत ही है।'' कार्यक्रम का संचालन मंत्री चन्दराम आर्य ने किया।

१२. योग शिविर सम्पन्न- आर्य समाज धुलिया में विविध कार्यक्रम सम्पन्न होते रहते हैं, इसी शृंखला में दिनांक १ से ९ अप्रैल २०१६ तक स्वामी अमृतानन्द महाराज के सानिध्य में बड़े उत्साह के साथ योग शिविर सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर स्वामी जी ने, ईश्वर, जीव, प्रकृति को बड़े ही सरल ढंग से समझाया। मन क्या है? इस पर कैसे नियंत्रण किया जा सकता है? क्रोध का मूल कारण क्या है? इसके साथ ही आपने कहा- सुख और दु:ख का कारण मैं खुद ही हूँ, दूसरे नहीं। इस ध्यान योग शिविर में महाविद्यालयों के प्राध्यापक, प्राचार्य एवं अनेक सदस्यों ने भाग लिया।

१३. वार्षिकोत्सव मनाया- आर्य समाज खलासी लाईन, सहारनपुर के प्रांगण में ६२वें वार्षिकोत्सव का शुभारम्भ यज्ञ से हुआ। यज्ञ में मुख्य यजमान- श्री विनायक देव शर्मा, श्रीमती रंजना शर्मा, श्री विवेक सिंह बाना, श्री रूपम बाना, श्री अनिल मारवाह, श्रीमती सुषमा मारवाह, श्री अंकित मारवाह, श्रीमती हर्षा मारवाह रहे। मुख्य वक्ता आचार्य श्री सोमदेव जी ने अपने प्रवचन में कहा- दुर्जन के संग से बचना चाहिये, दुष्ट दुर्जन की रग-रग में जहर होता है, दुर्जन के संग से अधिक नुकसान किसी के संग से नहीं होता है। ईश्वर के स्वरूप पर चर्चा करते हुए आचार्य श्री सोमदेव जी ने कहा- ईश्वर पावन पावन है ईश्वर के स्वरूप को अपवित्र कर दिया है, पवित्र वेद है, वेद को भी अपवित्र कर दिया, वेद के प्रति श्रद्धा पैदा करने वाले महर्षि दयानन्द है, ईश्वर का विशुद्ध स्वरूप महर्षि दयानंद ने स्पष्ट रूप से दिया हुआ है- जो व्यक्ति अपने हित चाहने वालों की बात नहीं मानता, वह व्यक्ति अपने शत्रुओं को हर्षित करने वाला होता है। परमात्मा, ऋषि, महर्षि और माता-पिता हमारे हित चाहने वाले हैं। तत्पश्चात् आचार्य जी ने कहा वासनाओं के गहरे संस्कार हमें सत्संग का लाभ नहीं होने देते और सुने हुए वेदोपदेश हमारे लिए लाभकारी नहीं हो पाते।

आचार्य सोमदेव जी ने अपने प्रवचन में कहा- गृहस्थ अपने आप में तीनों आश्रमों को समाहित करता है ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ व संन्यास आश्रम को । दोनों पति पत्नी एक-दूसरे के अनुकूल रहेंगे तो सुख रहेगा वरना दुख रहेगा। तत्पश्चात् आचार्य जी ने कहा कि गरीबी होते हुए भी धर्म के प्रति श्रद्धा है तो आपके दिन अच्छे हैं। उन्होंने कहा घर में सबकुछ सैट है पर घर का आदमी अपसैट है। उन्होंने कहा इसकी वजह दु:ख का कारण ईर्ष्या द्वेष करना

अनावश्यक खर्चे करना निन्दा वाणी की कठोरता आदि आदि कारण बताए। उन्होंने इन सबसे बचने के विभिन्न उपायों पर विस्तार से चर्चा की।

वैवाहिक

१५. वधु चाहिये- आर्यसमाजी परिवार, संस्कारित, आयु- २५ वर्ष, कद- ५ फुट ११ इंच, वर्ण- गेहुँआ, शिक्षा- पी.एच.डी. कार्यरत, प्रोफेसर, जी.एल.एस. यूनिवर्सिटी अहमदाबाद, गुज. में सेवारत युवक हेतु आर्यसमाजी परिवार की संस्कारित युवती चाहिए। **सम्पर्क**- **०९४२७४५८४९४** **ई-मेल**- joyoflifeonearth@gmail.com

चुनाव समाचार

१६. आर्य समाज औरंगाबाद-मीतरौल (पलवल) के चुनाव में **प्रधान**- श्री शिवसिंह आर्य, **मन्त्री**- श्री राजकुमार आर्य, **कोषाध्यक्ष**- श्री ठाकुरलाल आर्य को चुना गया।

१७. आर्य समाज सज्जन नगर, जि. उदयपुर (राज.) के चुनाव में **प्रधान**- श्री हुकमचन्द शास्त्री, **मन्त्री**- श्री हेमांग जोशी, **कोषाध्यक्ष**- श्री अशोक उदावत को चुना गया।

शोक समाचार

१८. आर्य समाज डोहरिया (शाहपुरा), जि. भीलवाड़ा, राज. के उत्साही, निष्ठावान प्रधान **श्री लादूराम सेन** का ६५ वर्ष की आयु में दि. २१ दिस. २०१५ को आकस्मिक निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। समाज व परिवार के लिए यह अपूरणीय क्षति हुई है। परोपकारिणी परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धाञ्जलि।

१९. श्री अम्बालाल सरस्वती का ९३ वर्ष की आयु में दि. १८ मार्च २०१६ को निधन भीलवाड़ा, राज. में हो गया। वे प्रारम्भ से ही आर्यसमाज से जुड़े हुए थे। उन्हें हिन्दी, संस्कृत व अंग्रेजी का अच्छा ज्ञान था। वे शिक्षा विभाग में प्रधानाचार्य के पद पर सेवारत थे। सेवानिवृत्ति के पश्चात् श्री ओमानन्द सरस्वती गुरुकुल चित्तौड़गढ़ से संन्यास ग्रहण किया था। वे ऐसे ऋषिभक्त थे, जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन एक श्रेष्ठ आर्य पुरुष व संन्यासी का व्यतीत किया। परोपकारिणी परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धाञ्जलि।

२०. श्री पृथ्वीनाथ चतुर्वेदी का निधन २५ दिसम्बर २०१५ को हो गया। उनका अन्तिम संस्कार वैदिक रीति से किया गया। वे आर्य विचारों के व्यक्ति थे। उनका निधन परिवार व समाज के लिये अपूरणीय क्षति है।

परोपकारिणी सभा एवं आर्यवीर दल राजस्थान के संयुक्त तत्त्वावधान में

सम्भाग स्तरीय आर्यवीर दल शिविर

का भव्य आयोजन

दिनांक : १५ मई २०१६ रविवार से २२ मई २०१६ रविवार तक

एवं

आर्य वीरांगना शिविर

दिनांक : ३० मई २०१६ सोमवार से ०५ जून २०१६ रविवार तक

स्थान : ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर (राज.)

सम्पर्क सूत्र : ०९४६००१६५९०

राजा और प्रजा जन परस्पर सम्मति से समस्त राज्य व्यवहारों की पालना करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ६.२६